मेरी कावड़ यात्रा

(वैद्यनाथ धाम देवघर–यात्रा वृतान्त 1995)

हेमराज बंसल

GBLABS
WE LOVES COMPUTING

प्रकाशकीय

साहित्य सृजन ईश्वरीय उत्प्रेरणा और मानवीय संवेदनाओं का नैसर्गिक प्रकटीकरण है। भावनाओं, विचारों और समाज के इर्द-गिर्द घटने वाली घटनाओं से उत्प्रेरित होकर सृजनकर अपनी तूलिका से विविध शब्दचित्रों को रंगायित करता है।

उसके हृदय के मनोभावों में घटनाओं का नीर-क्षीर विश्लेषण होना साहित्य सृजन की प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया से निसृत नवनीत समाज की कई दिशाओं का पथ प्रशस्त करता है। इस पूरी प्रक्रिया में साहित्यकार की अन्तर्चेतना, साहित्यकार का विवेक, उसकी अनुभूति क्षमता, शिल्प सामर्थ्य और जीवन का अनुभव कार्य करता है तब कहीं जाकर एक कलमकार अपनी पूरी संचेतना के साथ समाज के सामने आकर खड़ा होता है।

प्रस्तुत यात्रा वृतान्त ''मेरी कावड़ यात्रा'' श्री हेमराज बंसल की तीसरी पुस्तक है एवं युवा मण्डल संस्थान का छठा प्रकाशन है।

प्रकृति के विविध रंगों, यात्रा के अनुभवों, साथियों के साथ बिताये क्षणों और वार्तालाप के साथ अनेक स्थानों के बारे में जानकारियों को शब्दों में पिरोकर श्री बंसल ने पुस्तक को सरल, सुग्राह्य, सहज पठनीय, रोचक तथा यात्रा के बारे में समग्र जानकारी देने वाली बनाने का सफल प्रयास किया है।

यह पुस्तक यात्रा वृतान्तों की श्रेणी में एक नवीन आयाम स्थापित करेगी और कावड़ यात्रियों को श्रद्धा तथा अध्यात्म के रंग के साथ-साथ साहित्यिक अनुभूति का रसास्वादन करवायेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

संस्थान के माध्यम से साहित्यकारों को प्रकाशित कर समाज के सामने लाना तथा रचनाकारों को प्रोत्साहन प्रदान करना हमारा उद्देश्य रहा है। आशा है हम आपके सहयोग व स्नेह से इस दिशा में निरन्तर अग्रसर होंगे। प्रस्तुत पुस्तक आपको कैसी लगी इस प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी-

इन्हीं भावनाओं के साथ....

हरिमोहन बंसल
संयोजक-युवा मण्डल संस्थान, बारां

आशीर्वाद

यात्रा गुरू श्री परमेश्वर लाल जी मालानी

स्वभाव से मधुर, मिलनसार, हृदय से उदार, चरित्र से उज्ज्वल और स्नेहासिक्त वाणी से दूसरों का हृदय जीतने वाले श्री हेमराज बंसल समाज के चारित्रिक, नैतिक और धार्मिक विचारों के अधिष्ठाता है।

श्री वैद्यनाथ धाम कावड़ यात्रा के विचार को फलीभूत कर भगवान आशुतोष की असीम कृपा के आकांक्षी बन हेमराज बंसल ने पारमार्थिक पुण्य लाभ कमाया है।

यात्रा के खट्टे-मीठे अनुभवों को पाठकों तथा वैद्यनाथ धाम के श्रद्धालुओं के लिए शब्दों की कड़ियों में पिरोकर एक साहित्यिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुस्तक तैयार कर समाज के सनमुख लाने के प्रयास की जितनी सराहना की जाये कम है।

प्रिय अनुज हेमराज बंसल समाज के मार्ग-दर्शक बने, साहित्यिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति कर विकास के सोपानों को छूते हुए अपने अनुगामियों का पथ प्रशस्त करें यही मेरा आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ...

एक बार पुनश्च: भगवान आशुतोष से लेखक के यश, मंगल एवं दीर्घायु की कामना के साथ...

परमेश्वर लाल मालानी

आत्म कथा

शब्द संसार के समुद्र में मैं एक नन्ही बूँद का अस्तित्व बनाये रखने में भी असमर्थ हूँ। साहित्य के अथाह समुद्र में अवगाहन कर मैं अकिंचन इतना ही जान पाया हूँ कि माँ शारदा की साधना की सामर्थ्य मुझमें रंच मात्र भी नहीं है। फिर भी मेरे इष्ट मित्रों के आग्रह, परिचितों के भाव भरे आग्रह और साहित्यिक मित्रों के प्रेम भरे उलाहनों से मैंने इस यात्रा वृतान्त को पाठकों के सन्मुख लाने का तुच्छ प्रयास किया है।

यह यात्रा वृतान्त कैसा बन पड़ा? यह तो आप सुधि पाठकगणों की प्रतिक्रिया ही मुझे मार्गदर्शन प्रदान करेगी, परन्तु इसे लिखने के पीछे मेरी भावना नितान्त अध्यात्म प्रेरित और कावड़ यात्रियों को मार्गदर्शन मिल सके ऐसी रही है।

यात्रा के विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए मैंने पाया कि इन अनुभवों को पुस्तकाकार रूप में लिखकर सामने लाया जाये तो शायद आने वाली पीढ़ी और कावड़ यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज होगा।

इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरे सभी इष्ट मित्रों और शुभचिंतकों का आशीष रहा है तथा मेरे यात्रा गुरू श्री परमेश्वर लाल जी मालानी का मैं विशेष आभारी हूँ जिनके प्रयास से यह यात्रा तथा यात्रा वृतान्त सफल हो पाया। इसी के साथ युवा मण्डल संस्थान को प्रकाशन सहयोग के लिए में संस्थान को साधुवाद देता हूँ।

आप सभी सुधि पाठकों को यह यात्रा वृतान्त रूचिकर और प्रिय लगेगा ऐसा मेरा विश्वास है। फिर भी आपका आशीष और मार्गदर्शन मुझे मिले तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूंगा।

हेमराज बंसल

समर्पण

स्नेह, सलिल और माधुर्य भाव के प्रदाता

पूज्यनीय पिताश्री

समाज सेवी

श्री घनश्याम बंसल

जन्म : 26 मार्च 1929

निर्वाण : 27 जनवरी 2001

पूज्यनीय दादी जी

गुलाब बाई बंसल

जन्म : 1910

निर्वाण : 12.12.1989

की

स्नेह छाया तले

उन्हीं के पावन पवित्र

श्री चरणों में।

प्रस्थान

आदि गुरु श्री शंकराचार्यजी द्वारा भारतीय धर्म समुदाय की एकता और उत्थान के लिये स्थापित बारह ज्योतिर्लिंग में से एक है श्री वैद्यनाथधाम। यहां दर्शन होते हैं असीम श्रद्धा त्याग और भक्ति के। वैसे तो यहां बारहों माह ही भक्त आते रहते हैं परंतु सावन के महिने में तो चौबीसों घंटे कावड़ियों की पंक्ति ही नहीं टूटती है। शिवजी की आराधना में सावन बुदी एकम् से भादवा सुदी चौदस (शिवरात्रि) तक का विशेष महत्व है। सारे देश में भक्तगण नियम, व्रत, उपवास रख भोले को बेलपत्र आदि चढ़ा कर रिझाते हैं। देश भर में कई स्थानों पर गंगा आदि पवित्र नदियों से कावड़ में जल लाकर शिवजी को चढ़ाया जाता है। यहां वैद्यनाथधाम में सुल्तानगंज से कावड़ में गंगा जल लाकर भगवान शिव को चढ़ाया जाता है। श्रावन मास में चलने वाला कवाड़ियों का यह काफिला अप्रायोजित स्वस्फूर्त विश्व का सबसे बड़ा काफिला है। श्रद्धा और विश्वास के बलबूते यह यात्रा सदियों से निर्विघ्न सम्पन्न हो रही है तथा यात्रियों की तादाद प्रतिवर्ष बढ़ रही है।

इस यात्रा से मेरा परिचय मेरे मित्र सुदर्शन साबू ने करवाया। उनके मामाजी परमेश्वरलालजी मालानी पचासेक वर्षों से चिढ़ावा से बस लेकर लगभग सौ यात्रियों के साथ जल चढ़ाने जा रहे है। बस में भोजन बनाने आदि की व्यवस्था साथ होती है। उन्हीं की प्रेरणा से बारां के साबू परिवार से भी कोई न कोई एक सदस्य कोई दस वर्षों से कावड़ यात्रा पर जा रहे हैं। मेरे मित्र की प्रेरणा से मैं दूसरी बार कावड़ यात्रा में शामिल होने जा रहा हूं। सन् 1993 में भी मुझे यात्रा जाने का सुअवसर मिला था। उस वर्ष खराब स्वास्थ्य के कारण अंतिम पड़ाव की यात्रा मुझे बस में बैठ कर करनी पड़ी थी। मन में एक कसक सी रह गई थी। शायद इसी प्रेरणावश सुदर्शन ने जब मेरे से कावड़ यात्रा चलने के लिये कहा तो मैने तुरंत हामी भर दी।

इस वर्ष हमारी बारां मंडली में हम सात सदस्य हो गये हैं। मैं हेमराज बंसल, मित्र सुदर्शन साबू एवं उनके चाचाजी ओम्प्रकाशजी साबू, प्रदीप पोरवाल, बालमुकन्द ठाकुरिया, कैलास गोयल छबड़ावासी, तथा महावीर चित्तौड़ा; सभी व्यापार से जुड़े मित्र। हम 12 जुलाई 1995 बुधवार दोपहर बारह बजे बारां से जीप में बैठ कोटा के लिये रवाना हुये। परंपरानुसार सुदर्शनजी की मां ने हम सभी को तिलक लगा कर विदा किया। गाड़ी थोड़ी देरी से आ रही थी। अवसर का उपयोग कर सुदर्शन व चाचाजी, महावीर नगर तृतीय, कोटा में पढ़ाई के लिये रह रहे अपने बेटे मनीष से मिलने चले गये। हमने प्लेटफार्म में बैठ समय काटा तथा टिकटों के अनुसार अपने नाम बताने की योजना बनाई। पूर्व में आरक्षित टिकटों वाले यात्री न आने पर हमारा नया दल तैयार हुआ था। सात लोगों की सूची में चार आदमी बदल गये हैं।

कानपुर

अवध एक्सप्रेस अपरान्ह 4 बजे कोटा से छूटी। सायं 5.40 पर सवाई माधोपुर तथा 6.30 पर गंगापुर सिटी आया। पूरे रास्ते बारिश का सर्वथा अभाव था। रात नौ बजे सोने से पहले हमने घर से बांधकर लाया गया खाना खाया। रात में मुझे अच्छी नींद नहीं आई और लगभग हर स्टेशन पर उठता रहा। रात तीन बजे चाचाजी के आदेश पर सबको उठना ही पड़ा। प्रातः चार बजे हम कानपुर स्टेशन उतर कर वैटिंग रुम में चले गये। 6 बजे हम कानपुर में चिड़ावा कावड़िया संघ द्वारा आरक्षित किये गये अग्रवाल भवन, करांचीखाना पहुंच गये। चौकीदारों ने हमें हमारे रुकने की जगह बताई। संघ की बस यहां अभी तक नहीं पहुंची थी। बस को रात में ही पहुंचना था पर बीच में हरिद्वार स्नान का कार्यक्रम बन जाने के कारण बस यहां प्रातः साढ़े सात

बजे पहुंच पाई। तब तक हम नित्यकार्यों से निवृत्त हो लिये। हमारा साथी बालमुकंद ठाकुरिया यहां उसकी बहिन से मिलने चला गया और हम बाकी छः साथी राम मंदिर दर्शन कर बाजार नाश्ता करने चले गये। नाश्ते के बाद हम आधुनिक काल में निर्मित भव्य जे.के मंदिर देखने चले गये। यह मंदिर पद्मपतजी सिंघानिया वल्द कमलापतिजी सिंघानिया के जे.के. औद्यौगिक घराने द्वारा बनाया गया है। इसका शिलान्यास 1941 में तथा मूर्तियों की स्थापना 1960 में की गई है। ताजमहल का महत्व इस बात से ज्यादा है कि उसका निर्माण तीन सौ साल पहले हुआ था अन्यथा इस मंदिर में भी संगमरमर की कुराई का काम कोई कम नहीं है।

वापसी में हमें यातायात के साधनों की परेशानी आई। रा. जस्थान भवन तथा कराचीखाना यहां के रिक्शेवालों के लिये जाने पहचाने नहीं है। हमें गोल चौराहा, बड़ा चौराहा फिर फूलबाग होते हुये आना पड़ा। हम 10 बजे राजस्थान भवन पहुंच गये। हमें दोपहर बारह बजे कानपुर से इलाहाबाद के लिये रवाना होना था पर मामाजी ने रात की थकान के कारण कार्यक्रम में परिवर्तन कर दिया। अब हम रात के एक बजे इलाहाबाद के लिये प्रस्थान करेंगें। हम बारां के साथियों को स्लीपर में यात्रा के कारण थकान नहीं थी, हम क्यों अपना दिन खराब करें? हमने संघ से पहले 11 बजे दोपहर में ही इलाहाबाद के लिये प्रस्थान करने का विचार बना लिया पर मामाजी ने सुदर्शन को बस में साथ ही चलने के लिये राजी कर लिया।

मामाजी ने बिहारी लोगों के साथ यह कावड़ यात्रा आरम्भ की थी। बाद में आपसी मतभेद होने पर मामाजी ने अपना अलग संघ बना लिया। मामाजी की यह सावन की उनचासवीं कावड़ चढ़ेगी। मामाजी दस कावड़ फाल्गुन शिवरात्रि की भी चढ़ा चुके हैं। संभवतः राजस्थान में कावड़ यात्रा को प्रचारित करने

मेरी कावड़ यात्रा
बजे पहुंच पाई। तब तक हम नित्यकार्यों से निवृत्त हो लिये। हमारा साथी बालमुकंद ठाकुरिया यहां उसकी बहिन से मिलने चला गया और हम बाकी छः साथी राम मंदिर दर्शन कर बाजार नाश्ता करने चले गये। नाश्ते के बाद हम आधुनिक काल में निर्मित भव्य जे.के मंदिर देखने चले गये। यह मंदिर पद्मपतजी सिंघानिया वल्द कमलापतिजी सिंघानिया के जे.के. औद्यौगिक घराने द्वारा बनाया गया है। इसका शिलान्यास 1941 में तथा मूर्तियों की स्थापना 1960 में की गई है। ताजमहल का महत्व इस बात से ज्यादा है कि उसका निर्माण तीन सौ साल पहले हुआ था अन्यथा इस मंदिर में भी संगमरमर की कुराई का काम कोई कम नहीं है।
वापसी में हमें यातायात के साधनों की परेशानी आई। रा. जस्थान भवन तथा कराचीखाना यहां के रिक्शेवालों के लिये जाने पहचाने नहीं है। हमें गोल चौराहा, बड़ा चौराहा फिर फूलबाग होते हुये आना पड़ा। हम 10 बजे राजस्थान भवन पहुंच गये। हमें दोपहर बारह बजे कानपुर से इलाहाबाद के लिये रवाना होना था पर मामाजी ने रात की थकान के कारण कार्यक्रम में परिवर्तन कर दिया। अब हम रात के एक बजे इलाहाबाद के लिये प्रस्थान करेंगें। हम बारां के साथियों को स्लीपर में यात्रा के कारण थकान नहीं थी, हम क्यों अपना दिन खराब करें? हमने संघ से पहले 11 बजे दोपहर में ही इलाहाबाद के लिये प्रस्थान करने का विचार बना लिया पर मामाजी ने सुदर्शन को बस में साथ ही चलने के लिये राजी कर लिया।
मामाजी ने बिहारी लोगों के साथ यह कावड़ यात्रा आरम्भ की थी। बाद में आपसी मतभेद होने पर मामाजी ने अपना अलग संघ बना लिया। मामाजी की यह सावन की उनचासवीं कावड़ चढ़ेगी। मामाजी दस कावड़ फाल्गुन शिवरात्रि की भी चढ़ा चुके हैं। संभवतः राजस्थान में कावड़ यात्रा को प्रचारित करने
हेमराज बंसल

का श्रेय मामाजी को है। उनके नेतृत्व में सात कावड़िया संघ चल रहें हैं जिनमें छः सौ पच्चीस शिष्य हैं। यात्री बस, सामान, कर्मचारी, रुकने के स्थान, यात्रियों से संपर्क कर उन्हें बुलाना, यात्रा समय का निर्धारण आदि सब व्यवस्थायें मामाजी देखते हैं। मामाजी चिड़ावा से बस लेकर ही यात्रा पर आते हैं।

सुल्तानगंज में रेल्वे लाइन है। सुल्तानगंज के पास भ. ागलपुर बड़ा रेल स्टेशन है जहां दिल्ली से हावड़ा जाने वाली सभी गाड़ियां रुकती हैं। सुल्तानगंज में सुपरफास्ट गाड़ियों के स्टोपेज नहीं हैं। देवघर वैद्यनाथधाम में भी रेल्वेस्टेशन है। देवघर दिल्ली कलकत्ता मुख्य लाइन पर नहीं है। देवघर से दस किलोमीटर दूर जेसीडीह रेल्वे स्टेशन मुख्य लाइन पर है। दूरी से आने जाने वालों को इसी स्टेशन का उपयोग करना पड़ता है। जेसीडीह स्टेशन के बिल्कुल पास ही आरोग्य भवन के नाम से एक आरामगाह है। इस भवन में कलकत्ता के मारवाड़ियों ने कमरे बना कर दिये हैं। हमारे संघ के कई सदस्य इस भवन में यात्रा के बाद एक दो दिन आराम करते हैं। आरोग्य भवन मारवाड़ी रिलीफ ट्रस्ट द्वारा संचालित है। देवघर व सुल्तानगंज दोनों स्थानों पर बस यातायात की अच्छी सुविधा है।

एक बजे संघ में बना भोजन किया। सोकर व ताश खेलकर समय गुजारा। ढाई बजे चाचाजी के नेतृत्व में माल रोड पर 'हीर पैलेस' टाकीज में सुपरहिट पर विवादास्पद फिल्म 'बंबई' देखी। टाकीज के स्टैण्डर्ड के हिसाब से टिकट बहुत ज्यादा था पर फिल्म देखने के बाद यह अफसोस जाता रहा। ज्ञातव्य है कि इस फिल्म के निर्माता निर्देशक मणिरत्नम पर दो दिन पूर्व ही फिल्म के विरोध में बम से हमला किया गया था।

रात साढ़े आठ बजे संघ का भोजन हुआ। शुद्ध देशी घी में बने चावल, सब्जी, दाल, चपाती। बिल्कुल घर का सा खाना।

हंसी ठहाकों के बीच रात दस बजे बाद ही नींद आ पाई। रात डेढ़ बजे मामाजी ने पूरे संघ को जगा दिया। मात्र पौन घंटे में हम धर्मशाला से बस में आ गये। हमने बस में पहले सामान जमाकर सीटें रोकने का प्रयास किया पर चिड़ावा से आनेवाले यात्रियों ने उन सीटों पर अपना हक जताकर हमारा सामान हटा दिया। सहयात्रियों का व्यवहार हमें बहुत बुरा लगा। हमारे चार साथी केबिन में बैठे। मैं एक सीट के छोर पर जरा सा टिका। बहुत ही असुविधा से यात्रा करनी पड़ी।

संगम स्नान

इलाहाबाद से 60 किमी पहले सुबह साढ़े चार बजे बस रुकी और अधिकांश लोग जंगल में निपट आये। हमारे पास ऐसी तैयारी नहीं थी। यहां से चल बस सीधी संगम घाट इला. हाबाद पर रुकी। नाववालों से बहुत देर तक भावताव हुआ। सभी तीर्थों की तरह यहां भी लूट है। 39 यात्रियों का किराया 1500 रु. मांगा गया था और 525 में सौदा जमा। पंडे भी हमें पटाने के लिये मंडरा रहे थे पर मामाजी ने किसी को भी हाथ नहीं रखने दिया। हमें भी सख्त हिदायत थी कि किसी को न तो पैसे दें और न ही किसी को मुंह लगायें। संगमस्थल पर यमुना किनारे बने घाट तक सड़क बनी है। वहां से वास्तविक संगम कोई दो किमी है। पैदल कच्ची पगडंडी से जाओ या नाव से। नाव से जाने में स्नान बीच में हो जाता है, पैदल जाने पर किनारे पर नहाना पड़ता है। यमुना का जल नीलिमा लिये हुये है। बारिश के अभाव में अभी तक नया पानी नहीं आया है। गंगा में बरसात का पानी आ गया है। गंगा का जल मटमैला है। बीच संगम पर लकड़ी के तख्ते बांधकर लंबा प्लेटफार्म बनाया गया है। वहां अलग–अलग पंडे काबिज हैं। नाव से उतरने के बाद

इन प्लेटफार्म पर सामान रखना और इन्हीं पर बैठ कर लोटे से नहाना पड़ता है। इसका किराया यात्रियों से अलग वसूला जाता है। यहां पंडे संगम पूजा व स्नान में मदद के नाम पर भी कमाई कर लेते हैं। मुझे तैरना आता है। मैं संगम पर कूद–कूद कर नहाना चाहता था पर पंडो ने कदापि स्वतंत्रता नहीं दी। यहां बहुत तेज धार पड़ती है। पंडों के मुताबिक गंगा की धारा कब किधर रूख कर ले कहना मुश्किल है। ऐसे में तैरना जान जोखिम में डालना है।

गंगा के पावन तट पर बिना शौच मंजन किये ही संगम का पुनीत स्नान करना पड़ा। हम सात बजे संगम पहुंचे थे। साढ़े सात पर नाव में बैठे और साढ़े आठ बजे वापस घाट पर उतर गये। दो नावों की एक घंटे की कमाई 525 रु. कम नहीं थी। बस रवाना होने से पहले पार्किंग चार्ज के नाम पर पचास रु. और देने पड़े। कोई आध किमी दूर स्थित बड़े हनुमानजी के मंदिर में लोगों ने गंगा से लोटों में भरकर लाया जल चढ़ाया। यहां हनुमानजी की विशाल लेटी हुई प्रतिमा है। हमें इस मंदिर की जानकारी नहीं थी। संगम घाट पर किलेनुमा निर्माण है। बताया गया कि इसकी नींव अकबर ने रखवाई थी तथा पूर्ण निर्माण शाहजहां ने करवाया था। किले के भीतर कल्पवृक्ष या अक्षय वृक्ष है। हम उसके दर्शन करने नहीं जा सके। वैसे कल्पवृक्ष हमें घाट से दिखाई दे रहा था। यहां कुंभ का मेला भरता है। कई जगह कुंभ मेले के अवशेष सड़कें, गोल ड्रम लगा कर बनाये गये अस्थाई पुल तथा कट्टों में मिट्टी भरकर बनाये घाट नजर आ रहे हैं।

वाराणसी

इलाहाबाद शहर के आगे जी.टी. रोड पर एक ढाबे के पास

पानी की सुविधा देख बस रोक कर नाश्ता किया गया। इसके बाद बस सीधी वाराणसी के अस्सी इलाके में मारवाड़ी सेवा संघ भदैनी पर रुकी। हमें धर्मशाला के पिछले हिस्से में दूसरी मंजिल पर कमरा नम्बर 15 दिया गया। सभी लोगों ने स्नानादि के लिये स्नानागारों पर लाइन लगाई। हमने अपने कपड़े भी ध ोाये। पौने दो बजे तक भी भोजन का बुलावा नहीं आया तो साथ रखे नमकीन व बिस्किट्स डकार गये। भोजन तीन बजे तैयार हुआ। फालतू समय में मैंने शिवस्तुति व आरती जो यहां रोज गाई जाती है, लिखी। यहां 'शीश गंग अर्द्धंग....' तथा 'ओम् जय शिव ओंकारा... ' आरतियां ज्यादा गाई जाती हैं।

इस धर्मशाला में बहुत सारे फोटो लगे हुये हैं जो धर्मशाला निर्माण में बड़ा योगदान करने वालों तथा यहां के नये पुराने ट्रस्टियों के हैं। चाचाजी ओम्जी साबू ने बताया कि इनमें लगा एक फोटो श्री नंदलालजी अग्रवाल उर्फ भगतजी का भी है जो उनके (साबू परिवार के) पैतृक गांव बहल (जिला भिवानी–हरियाण ा) के थे। इस धर्मशाला का फोन न. **310226** तथा **311045** है।

तारीख **14.7.1995** शुक्रवार को हमने सायं चार बजे धर्मशाला की तीसरी मंजिल पर टीनशेड के नीचे बैठ गर्मी के मारे पसीना बहाते हुये भोजन किया। संघ के साथ कुछ सीखने को मिलता ही है। झूठन नहीं छोड़ना, परोसगारी में सहयोग करना, मनुहार करके खिलाना, खाने से पूर्व भगवान का नाम लेना तथा भोग लगाना आदि। खाने के बाद हम कमरे में जा अधलेटे से आध घंटे तक मजाक पट्टी करते रहे। मुझे भयंकर नींद आ रही थी पर सोने का मतलब था घूमने से वंचित रहना। साढ़े चार बजे हल्की बरसात में पैदल ही कोई एक किमी दूर स्थित दुर्गामंदिर तथा दुर्गाकुंड के दर्शन किये। प्राचीन व छोटा सा मंदिर है पर यहां इस मंदिर की बहुत मान्यता है। यहां से

सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर पैदल ही चले गये। मानस मंदिर आधुनिक काल की पूर्णतया संगमरमर से निर्मित भव्य इमारत है। यह मंदिर कलकत्ता के प्रसिद्ध अग्रवाल मारवाड़ी सुरेका घराने द्वारा बनवाया गया है। पूरी तुलसी रामायण संग. मरमर की भित्तियों पर साफ व सुन्दर अक्षरों में गुदी हुई है। इस मंदिर की एक ओर विशेषता यहां की चल झांकियां हैं। इस मंदिर के कुछ फोटो लिये। यहां से पैदल ही हम आध किमी दूर संकटमोचन हनुमान मंदिर चले गये। यह प्राचीन मंदिर है। बताया गया कि इस मंदिर की स्थापना स्वयं गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काशी निवास के दौरान की थी। यहां हनुमानजी की प्रतिमा ऐसी लगती है जैसे भगवान ने भृकुटि तान रखी हो। यहां बहुत सारे लंगूर हैं जिन्हें भक्तगण चने व मुंगफली खिलाते हैं। यहां की एक विचित्र बात यह नजर आई कि यहां कुत्ते और बंदरों में दोस्ती है। जबकि अन्य सभी जगहों पर कुत्ते बंदरों को भगाते नजर आते हैं। यहां बंदर प्रसाद बैग आदि छीन लेते हैं। हमारे साथ एक दुर्घटना हो गई। मैंने एक छोटी बंदरिया को सिर पर छू दिया। शायद इसी की प्रक्रिया ने एक बड़े बंदर ने सुदर्शन साबू की पीठ पर वार कर दिया। साबू के खरोंचें आई तथा हल्का खून भी निकला। साबू से हमने इस घटना को ले बहुत देर तक मजाक की। किसी ने बजरंगबली प्रसन्न हुये हैं और किसी ने कहा कि नाराज हैं। रात सुदर्शन साबू को सुरक्षा के लिहाज से धर्मशाला की दुकानों में ही चल रही एक निजी चिकित्सा दुकान में टिटनेस का इंजेक्शन लगवाया गया।

घूमने का आज का हमारा अंतिम लक्ष्य भगवान विश्वनाथ के दर्शन करना था। पैदल या वाहन से चलने पर बहुत बहस हुई। चाचाजी ने एक विक्रम रिक्शा कर एक किमी बचा दिया इसके बावजूद मंदिर तक पहुंचने में हमें भारी थकान आ गई। रास्ते में एक जगह मौसम्मी का रस लिया जो बेस्वाद था। कोई

दो किमी संकरी गलियां, मुस्लिम बस्ती, कीचड़ भरा रास्ता पार करने के बाद एक चौराहे पर पहुंचे। यहां से दश्वमेष घाट के रास्ते पर दोनों ओर खूब बाजार सजा धजा है। बाबा विश्वनाथ तो राख मल कर धूनी रमा कर बैठे हैं। उनके मंदिर के आसपास की चकाचौंध सौन्दर्य प्रसाधन एवं विलासिता का खुला प्रदर्शन भक्तों का ध्यान त्याग से भोग की ओर खींचता है। गलियां क्रमशः संकरी होती जाती है और अंत में 6–7 फुट चौड़ी ही रह जाती है। मशीनगन लिये सन्नद्ध बैठे सुरक्षाकर्मियों को देखते ही हम समझ जाते हैं कि बस मंदिर आ गया है। हम थोड़ा से चूक गये और मंदिर के पिछवाड़े जा पहुंचे। एक बड़े दरवाजे पर बीसेक हथियार बंद जवान खड़े थे। हमने उनसे विश्वनाथ मंदिर का रास्ता पूछा तो उन्होंने हमें बुलवा लिया और मेटल डिक्टेटर तथा जामा तलाशी की सुरक्षा जांच करने के बाद बड़े दरवाजे के अंदर भेज दिया। रास्ते में भी मेटल डिक्टेटर लगे थे। यह रास्ता ज्ञानवापी मस्जिद के साथ वाला रास्ता है। मंदिर और मस्जिद के बीच में एक संकरी सी गली है। इस दरवाजे से प्रवेश करने पर हम विवादास्पद स्थल को देख सके। विश्व हिन्दु परिषद द्धारा ज्ञानवापी मस्जिद को मुक्त कराने के लिये आंदोलन की घोषणा, 6.12.1992 को अयोध्या मे हुआ विध्वंस आदि को देखते हुये इतनी व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई है। हम लंबी गली को पार कर विश्वनाथ मंदिर के सामने वाले मार्ग पर पहुंचे। एक दुकान से पत्रं पुष्पं खरीदा और वहां ही जूते खोले। मंदिर में प्रवेश से पूर्व पुनः सघन तलाशी हुई। आज हमें भोलेनाथ के दर्शन दूर से ही कराये गये। भेंट प्रसाद भी पुजारी ग्रहण कर रहे हैं।। यहां मंदिर में कहीं बैठकर नाम जपने का सूखा स्थान नजर नहीं आया। अभी सायं 7.15 पर भीड़ विशेष नहीं है। हमें बहुत थकान है। हम जल्द ही वापस लौटे और सामने ही मां अन्नपूर्णा मंदिर के दर्शन किये। दुकान से जूते पहन हम लौटने लगे। बाजार से हमारे साथियों ने नेकरें खरीदी।

साइकिल रिक्शों में बैठ रात साढ़े आठ बजे मारवाड़ी सेवा संघ धर्मशाला पहुंचे। संघ का भोजन साढ़े नौ से साढ़े दस के बीच हुआ। इसी दौरान हुई तेज बरसात से भोजन में व्यवधान भी आया। अब सोना ही है। प्रातः चार बजे उठने का आदेश हुआ है।

गंगा स्नान

आज तारीख 15 जुलाई 1995 शनिवार प्रातः साढ़े तीन बजे ही हमारे उपदल के सातों व्यक्ति जाग गये। वस्तुतः कोई अच्छी तरह सो ही नहीं पाया। छोटा कमरा, बिस्तर तकियों की कमी, मच्छर, गर्मी और अजीब सी खुजली। शौच मंजन से निपट हम गंगा स्नान की तैयारी कर नीचे चौक में आ गये। मामाजी का आदेश मिलने के बाद कुछ लोग पैदल और कुछ रिक्शों से दश्वमेष घाट पहुंचे। मामाजी ने दो रु. सवारी में गंगा के दूसरी ओर ले जाने लाने वाली नाव तय कर रखी थी। सारे साथ बैठे। बीच गंगा में मामाजी ने भजन छेड़ा तो मन के तार झंकृत हो गये।

मेरी छोटी सी है नाव, तेरे जादू भरे पांव।
मोहे डर लागे राम, कैसे बिठाऊं तोहे नाव में।
कैसे बिठा....?

नाव से हमें राजा हरिशचंद्र घाट तथा मणिकर्णिका घाट दिखाई दे रहे थे जहां दाह संस्कार हो रहे थे। मैंने गंगा पार जा जम कर तैराकी की। स्नान के बाद सामूहिक शिवआरती गाई गई। बीच गंगा में से शिव को चढ़ाने हेतु जल से लोटे भरे गये। पूरे संघ में सिर्फ मैं ही सूखे कपड़े ले कर गया था। यहां के पुराने दस्तूर के अनुसार सबने गंगा में कपड़े धोये और वे ही पहन लिये। कपड़े भी क्या? मात्र चड्डी बनियान और लिपटा हुआ तौलिया। रास्ते में पत्र पुष्प खरीदे। भीड़ भड़क्के के

बीच विश्वनाथ भगवान को जल, पत्र, पुष्प अर्पित किये। वापसी मे हमने जयपुरिया धर्मशाला देखी। सेठ आनंदीलाल जैपुरिया स्मृति भवन पंचतारा होटल जैसी सुविधायुक्त धर्मशाला है। यह दश्वमेष रोड (गोदालिया) पर ही है। गंगा घाट तथा मंदिर यहां से पास पड़ता हैं। लौटते समय रास्ते में साथियों ने चाय पी। मुझे दूध नहीं मिल सका। धर्मशाला के सामने आम खरीद कर नाश्ता किया।

अब हमें बस से आगे की यात्रा पर निकलने हेतु तैयारी करने के निर्देश मिल चुके हैं। हम पौने नौ बजे तैयार हो गये थे। अभी संघ का नाश्ता बन रहा है। नाश्ता करके निकलने के कारण हम साढ़े ग्यारह बजे बस पर पहुंचे। बस में बैठने की व्यवस्था के लिये मामाजी ने सारा सामान बस की छत पर रखवाकर तिरपाल से ढंकवाकर बंधवाया। हमें साथ बैठने के लिये जगह दी गई। यह सब सुदर्शन के प्रयासों से हो पाया। आशा है आगे की यात्रा आराम से होगी। चिड़ावा के अतिरिक्त अन्य कई जगहों के दल सुल्तानगंज तक रास्ते में आकर इस संघ में मिलते चले जाते हैं। बारां दल गत वर्ष काशी में शामिल हुआ था। इस बार हमने कानपुर से ही बस पकड़ ली।

यह हमारी 42 सीटर आर. जे. 14–पी. 3581 नम्बर की बस योगेश ट्रेवल्स खेतड़ी वालों की है। बस के मालिक खेतड़ी के अग्रवाल बंधु रघु एरन् व बृजेश ऐरन् हैं। दोनों में से कोई एक तथा चालक गणेश उर्फ पंडितजी भी गत पांच वर्षों से कावड़ चढ़ा रहे हैं। बस के आगे स्थाई रूप से श्री वैद्यनाथध ाम कावड़िया संघ लाल रंग से लिखा हुआ है। आज बस से यात्रा करने वालों की संख्या 56 हो गई है। बस में सामान और सवारियों को सेट करने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी। वाराण ासी से आगे की यात्रा में काम आने वाला राशन खरीदा जाता

है। राशन के साथ चार कट्टे नीबू तथा तीन कट्टे चीनी के (शिकंजी के लिये) भी खरीद कर बस में रखवाये गये हैं। बस डेढ़ बजे रवाना हो सकी और हमने यह गर्मी का समय पसीना बहाते हुये बहुत मुश्किल से काटा। दोपहर में वाराणसी के इस बाजार में काफी चहल–पहल है। बस को वाराणसी शहर के गली कूचे पार करने में ही घंटा भर लग गया। जी.टी. रोड पकड़ बस मुगलसराय की ओर आगे बढ़ी। एक डीजल पंप पर डीजल लिया गया तथा ऑयल ग्रीसिंग करवाई गई। पैट्रोल पंप के पेशाबघर एवं ठंडे पानी के कूलर का लगभग पूरी बस ने उपयोग किया। आगे जी.टी. रोड से ही लगे चंदौसी नामक गांव के पास परिवहन महादेव मंदिर पर रुककर संघ ने मारवाड़ी ध र्मशाला से बना कर लाया हुआ भोजन ग्रहण किया। भोजन में पूरी, आलू की सूखी भाजी तथा एक–एक आम सभी को दिया गया। पास ही लगे हैंडपंप बिहारी भाषा में चापाकल का पानी काम में लिया। रमणीक वातावरण में पिकनिक का सा आनंद आया। बस आगे रवाना होने में साढ़े चार बज गये।

हमारे वाराणसी से विलम्ब से निकलने का कारण भारतीय रेल थी। इटारसी से आने वाले यात्रियों को लेने के लिये मुग. लसराय स्टेशन पर बस भेजी गई थी। रेल साढ़े तीन घंटे देरी से पहुंची और बस तब तक वहीं खड़ी रही। धार्मिक सोच के अनुसार यात्रा के मार्ग में यदि काशी आता हो तो काशी स्नान एवं विश्वनाथ के दर्शन करने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिये। इटारसी वालों का वाराणसी पहुंचना, फिर उनका स्नान दर्शन करने जाना, समय होने पर नाश्ता व भोजन बनवाना, फिर बस में सवारियों व सामानों को सेट करना; सभी हमारी देरी के कारण बनते चले गये।

नाक के सवाल पर संघ के सदस्यों में रास्ते में लड़ाई हुई। बस ड्राइवर को सभी पंडितजी कह कर पुकारते हैं। पंडितजी

इस संघ के प्रमुख सदस्य हैं। चिड़ावा के प्रमुख मिर्ची व्यवसायी व मामाजी के खास सहयोगी रघुवीरजी बाचुका (अग्रवाल) ने रास्ते में पंडितजी को भजन की कैसेट बस के टेप में लगाने के लिये दी। पंडितजी ने उनकी बात नहीं मानी और रास्ते में हमें फिल्मी गीत सुनने पड़े। इससे रघुवीरजी के अहं को ठेस पहुंची। उन्होंने ड्राइवर की शिकायत मामाजी तथा बस मालिक से की। डीजल पंप पर पंडितजी ने भोजन कराने का प्रस्ताव रखा तो रघुवीरजी ने झट उनकी बात काट दी। आपस में गांठ बंध गई। शिव मंदिर पर भोजन करने से पूर्व दोनों में आपस में तू–तू मैं–मैं हुई। सबने तमाशा देखा।

पटना

नौबतपुरा चेकपोस्ट पर हम सायं पांच बजे पहुंचे। यहां से उत्तर प्रदेश की सीमा समाप्त होती है तथा बिहार के भंभुआ जिले की सीमा शुरु होती है। चेक पोस्ट के कारण इस छोटे कस्बे में भारी जाम लग रहा है। पंडितजी ने घुमाफिरा कर बस को निकाल ही लिया। अभी तक हमने 46 किमी सफर किया है। रोहतांश जिले के मोहानियां गांव के आगे बस जीटी रोड छोड़ बायीं ओर मुड़ गई। रात सात से आठ बजे तक एक छोटे से गांव में पानी पेशाब के लिये रुके। इसके बाद बस में भजन कीर्तन चला। आरा जिले की सीमा पर शेरघाटी में पुलिस वालों द्वारा बस रोकी गई। यह बिहार का खतरनाक इलाका है, यहां रात में सफर करने की इजाजत नहीं है। ड्राइवर ने पुलिस वालों से बहुत हुज्जत की। हम अपनी जवाबदारी पर बस ले जा रहे हैं। पुलिस ने कहा कि लिख कर दे कर जाओ। ड्राइवर अपनी सीट पर आया। उसने गाड़ी स्टार्ट कर दी और हम सब जोर जोर से 'बोल बम' के नारे लगाने लगे। रास्ता वाकई सूना था। कहीं कोई आदमी या वाहन नहीं दिखाई दे रहा है। सुरक्षा

की दृष्टि से टेप तथा बिजली बंद कर दी गई। सब यात्री भी ऊंघने लगे। सोन नदी के पुल से पूर्व मुकामाघाट में शोर–शराबा सुनकर यात्रियों की नींद टूटी। हमारे बस चालक पंडितजी से एक पुलिस वाला जोर–जोर से बोल रहा था।

'इतनी रात में यह बस यहां तक आई कैसे?'

शायद पुलिस वाले ने कुछ पी रखी थी। बहुत देर में जाकर भोलेबाबा ने उसे सद्‌बुद्धि दी।

यहां सोन नदी पर विशाल पुल बना हुआ है। पुल की ऊपरी मंजिल पर डबल लाइन रेल की पटरी है और नीचे की मंजिल पर सिंघल लाइन सड़क। पहले पटना से इस ओर आने वाले वाहन निकाले गये। बाद में हमारा नम्बर आया। यहां वाहनों में हमारी बस के अतिरिक्त कोई भी यात्री वाहन नहीं था। पुल पर रास्ता बहुत खराब है तथा पुल की ऊंचाई कम है। हमारी बस पर बंधे सामान किसी गर्डर से टकरा गये। चार–पांच सूटकेस टूट गये। पुल पार करने के बाद सभी ने राहत की सांस ली। आरा का खतरनाक जंगल समाप्त हो चुका था। पटना से 45 किमी पहले बस रोक कर सभी ने चाय पानी लिया। रात सवा बारह बजे हमारे विश्राम स्थल राणाप्रताप भवन पर आकर बस खड़ी हो गई। मछुआ टोली, आर्यकुमार रोड, राजेन्द्रनगर, पटना, पिन–800004, बिहार स्थित यह भवन महाराणा प्रताप स्मृति ट्रस्ट के नाम से संचालित है। इस ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन नम्बर 558 तारीख 17.12.1970 है। यह भवन स्थानीय मारवाड़ियों द्व ारा बनवाया गया है।

वाराणसी से पटना का सफर कई मायनों में कष्टप्रद रहा। विलम्ब भी बहुत हुआ। पुलिसवालों से तथा संघ में आपस में माथाफोड़ी हुई। हमारे आगे जबलपुरवालों की जीप चल रही थी पर पूरे रास्ते जीप व बस कहीं नहीं मिल सकी। जीप यात्री भूखे रहे तथा उन्होंने शिकायत की। बस में सवारियां तथा सामान

बहुत ज्यादा था। पुल से टकराकर कई लोगों के सूटकेस टूटे तथा सामान खराब हुआ। यात्रियों में भी आपस में मनमुटाव हुआ।

इस इलाके में अभी धान की रोपाई चल रही है। हमें पूरे रास्ते में दो जगह कोई दस मिनट के लिये बरसात मिली। पूरे रास्ते हम गर्मी में झुलसते रहे। जी.टी. रोड के आसपास सम्पन्नता जान पड़ी पर मोहानियां मोड के बाद कम जनसंख्या और गरीबी दिखाई दी। गांवों में कच्चे घरों की छतें धान की पराल से ढंकी जाती है। मध्यमवर्ग के लोग गोल लंबे कवेलू का भी प्रयोग करते हैं।

रात आराम से गुजरी और अभी तारीख **16.7.1995** रविवार प्रातः 6 बजे उठ गये। आज इस भवन में मारवाड़ी युवा मंच पटना की ओर से श्रावणी मेले का आयोजन भी किया जा रहा है। हमारे यहां सावन को बहुत महत्व दिया गया है। वाराणसी की धर्मशाला में भी सावन महोत्सव के उपलक्ष में शिवपुराण महाकथा का आयोजन चल रहा था। श्रावणी महोत्सव के कारण यह भवन हमें दोपहर 11 बजे खाली करना है। मामाजी का फरमान आ चुका है। आठ बजे नाश्ता तथा 10:30 पर खाना खाकर निकलना है।

प्रताप भवन में सोने के लिये हमें गद्‌दे लगे, साफ चादरें बिछे, आराम दायक तख्ते मिले। यहां के आधुनिक शौचालय साफ–सुथरे मार्बल लगे थे। नहाने धोने में कोई तकलीफ नहीं आई। नौ बजे चाचाजी ओम्‌प्रकाशजी साबू के नेतृत्व में हम रिक्शों में बैठ बिरला मंदिर देखने रवाना हो गये। सब्जीबाग में स्थित इस मंदिर में भगवान लक्ष्मीनारायण की मूर्तियां विराजित हैं। इस मंदिर में धर्मशाला भी है जहां यात्री कमरा लेकर पांच दिन तक रुक सकते हैं। मछली टोला से सब्जीबाग तक रास्ता बहुत खराब है। उबड–खाबड़, कीचड़ युक्त और मांसमछली का

बदबूदार बाजार। हमारा एक रिक्शेवाला भ्रमित हो पहले सब्जी मंडी पहुंच गया था। वहां से वापस आने में सबका समय खराब हुआ। पौने दस बजे हम प्रताप भवन आ गये।

प्रताप भवन पहुंचने पर लगा कि अभी भोजन बनने में देर है। चाचाजी ने तुरंत ही एक और मंदिर दिखाने का कार्यक्रम बना लिया। हमारे तीन साथी थक कर लेट गये और चाचाजी के साथ सुदर्शन, मैं तथा ठाकुरिया हम चार साथी दो साइकिल रिक्शों में बैठ पटना जंक्शन स्थित भगवान महावीर (हनुमानजी) के तिमंजिला मंदिर पर पहुंचे। यहां बहुत भीड़ है। भक्तों में अधिकांश कावड़ यात्री ही हैं। बताया जाता है कि यह मंदिर यहां के दबंग एसपी कुणालजी के प्रयासों से बन पाया है। कहा जाता है कि यहां के पुजारी के पास बहुत अवैध धन था जो प्रशासन ने इसी मंदिर के निर्माण में लगाया। पुजारी के धन के बारे में तरह–तरह की अफवाहें फैली हुई हैं। एक अफवाह यह भी कि लुटेरे यहां अपना लूट का माल छिपाकर रखते थे।

दर्शन कर साढ़े ग्यारह बजे वापस आये तो भोजन चालू था। हम भोजन आदि से निवृत्त हो साढ़े बारह बजे सामान जमा कर आगे की यात्रा के लिये तैयार हो गये पर हमारी बस प्रताप भवन से पौने तीन बजे निकल सकी। रास्ते में पटना नगर में एक पहाड़ी के नजदीक गांधी सेतु पथ पर बस में ऑइल डलवाया गया तथा कोई पैकिंग लगवाया गया। यहां आध घंटा पूरा हो गया। साढ़े तीन बजे रवाना हो पटना से 85 किमी आगे शिवनार (जिला पटना) नामक कस्बे में सायं 6 बजे डीजल लेने के लिये बस रोकी गई। अनिवार्य आवश्यकताओं के लिये यात्री उतर पड़े और आध घंटा यहां भी लग गया। वाराणसी से पटना 278 कि.मी. तथा पटना से सुल्तानगंज 195 कि.मी. है।

सुल्तानगंज

रात नौ बजे हम मुंगेर जिले के हेमजापुर गांव में पहुंचे। यहां से सुल्तानगंज अभी 40 किलोमीटर दूर है। रात्रि में सुल्तानगंज में 63 यात्रियों के सोने की व्यवस्था मिल पाये या न मिल पाये। मामाजी ने यहां के शिवमंदिर में ही रात गुजारने के आदेश दे दिये। हमें पटना से यहां तक 155 किमि चलने में साढ़े पांच घंटे लग गये। इस रास्ते में पास–पास गांव बसे हुये हैं तथा सड़क गांवों के बीच होकर गुजरती है। इस रास्ते में हाथीदह नामक गांव में मैकडोवेल की शराब फैक्ट्री है। इस इलाके में हरियाली है तथा यहां अच्छी बरसात हो चुकी है।

शिव मंदिर हेमजापुर में रुकने की खबर मिलते ही हमारे अनुभवी साथी सुदर्शन व चाचाजी चादरें लेकर दौड़े और उचित जगह रोकी। छोटा सा मंदिर और यहां पूर्व में ही दो ट्रक, एक मेटाडोर तथा हमारे जबलपुरवाले साथियों की जीप खड़ी थी। हमारी असली तपस्या अब शुरु होगी। टॉर्च, लोटे, प्लास्टिक शीट आदि सामान अब काम में आयेंगें। यहां एक चापाकल लगा हुआ है। आसपास की सारी जगह सुविधाओं के काम आती ही है। भोजन के मामले में यहां अप्रिय बात हुई। हमारे नेता गुरुजी उर्फ मामाजी परमेश्वरदयालजी ने सबसे पूछा कि खाना ही बनवाऐं या डिब्बों में बंद नाश्ता करके काम चला लेंगें। रात बहुत हो गई है। खाना बनने में बारह बज जायेंगे। सबने नाश्ता करके ही काम चलाना स्वीकार कर लिया और नाश्ता बांट दिया गया। पर इस व्यवस्था से पहले से ही रुष्ट बैठे रघुवीरजी संतुष्ट नहीं हुये।

'क्या हमें यहां भूखे मारने के लिये ही लाया था ? ये तीन–तीन आदमी जो लाद के लाया है क्या दूध देगें ?'

अब इटारसी वाले जगदीश मामाजी को बीच बचाव करना

पड़ा।

दुबारा पूछ लो, 'जिसे खाना ही चाहियें उसके लिये खाना बनवा दें।'

फिर पूछने की प्रक्रिया हुई तथा बीस यात्रियों के लिये पुड़ी एवं तुरई की सब्जी बनी। हम भरपेट नाश्ता करके कोई एक किमी घूम भी आये थे। बाद में खाना बच गया और बहुत आग्रह करके हमें पुरी सब्जी खिलाई गई। साढ़े ग्यारह बजे सो पाये। नींद गहरी आईं पर ढाई बजे ही पुनः जागने की सीटी बज गई। सवा चार बजे बस यहां से रवाना हुई और हम बिना रुके दिनांक 17 जुलाई 1995 सोमवार सुबह 5.30 पर सुल्तानगंज पहुंचे। रास्ते में भीड़ होने के कारण हमारे संघ के पड़ाव मुरारका मील पहुंचने में हमें छः बज गये।

वाराणसी के बाद से सारे मार्गों पर कावड़ यात्रियों की भीड़ दिखाई देने लगती है। गंगा स्नान, काशी विश्वनाथ मंदिर, संगम स्नान, पटना रेल्वे स्टेशन सभी जगह भगवा वेशधारी कावड़िये दिखाई दे रहे हैं। इन इलाकों में कावड़ियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है तथा हर व्यक्ति कावड़ियों की मदद भी करता है। मिनी बसें, जीपें आदि कावड़ियों से भरी हैं तथा उन पर भगवा ध्वज लगे हैं और अपने कावड़िया संघ का नाम लिखे बैनर लहरा रहे हैं। हेमजापुर में हमारे साथ चार दल रुके हुये थे। इन दिनों यहां कोई भी सार्वजनिक धार्मिक स्थान खाली नहीं रहता है। सुल्तानगंज तो पूरा भगवा वस्त्र धारियों से रंगा हुआ हैं। सारे बाजार में भगवा वस्त्र, झंडे, तथा कावड़ सामानों की अस्थाई दुकानें सजी हुई हैं। मुरारका मिल में हमारे लिये पुरानी कोठी खोल दी गई जिससे हमारे पूरे संघ को छत तथा पक्का फर्श मिल गया। चाचाजी ओम्जी साबू ने बताया कि इस मुरारका मील में पहले टॉकीज चला करता था।

पद्यात्रा प्रारंभ

हमने यहां आकर बस से हमारे सारे सामान निकाले एवं दुबारा पैक किये। तेल, साबुन, कांच, कंघा, पेन्ट, शर्ट, जूते, ताश आदि अब हमारे काम नहीं आयेंगें। चड्डी, बनियान, तौलिया, निकर, टॉर्च, लौटा, एक झोले में निकाले हैं। हम चाचाजी के नेतृत्व में कावड़ लेने चल दिये, सिर्फ चड्डी, बनियान और तौलिया पहन कर। कुछ पैसे तथा एक कैमरा भी रखा। पूरे बाजार में कावड़ भरकर लाते लोगों की ही भीड़ मिली। हम पुरानी दुकान पर ही पहुंच गये जहां से संघ के सदस्य बरसों से अपनी बहंगी बनवा रहे थे। इस दुकान में पहले से ही काफी भीड़ थी। हमारी बहंगियां दो घंटे में बन पाई। आज सुदर्शन ने पड़ोस की दुकान पर भाव पूछ लिया। पुराना दुकानदार ज्यादा पैसे लगा रहा है। हमारी सात बहंगियों के 240 रु. के स्थान पर 190 रु. ही दिये गये। इसमें भी खरीदार तथा बेचवाल दोनों को नाराजी रही। बाकी सामान डिब्बे, पवित्रियां, त्रिशूल, आरती, अगरबत्तीदान आदि सामने की दुकान से ही खरीदे गये। सातों कावडें हाथ में उठा हम गंगा नदी से सबसे दूर वाले घाट पर पहुंचे। एक तख्ता खाली देख कावड़े रखी। पहले हमने स्नान किया, बाद में कावड़ों को धोकर पवित्र किया और डिब्बों में गंगाजल भरकर उन्हें मिट्टी लगा पैक किया गया। तख्त के मालिक पुरोहितजी ने कावड़ चढ़ाने का संकल्प दिलवाया। कावड़ पूजा कर सामूहिक आरती गाई गई। पास के दुकानदार को पूजा सामान का तथा पुरोहितजी को दक्षिणा का भुगतान किया गया। कम पैसे देने के कारण दोनों हमारे से नाराज से रहे। एक व्यक्ति को कैमरा दे हमने कावड़ उठाये गंगा में खड़े हो फोटो खिंचवाया। घाट पर भारी फिसलन थी। सावधानी से चलते हुये मुख्य मार्ग पर पहुंचे। हमने सारे गीले कपड़े ही पहने हुये हैं। रास्ता भूलने पर

कुछ ज्यादा चल हम विश्राम स्थल मुरारका मील पहुंचे। संघ द्वारा निर्धारित स्थान पर अन्य कावड़ों के साथ हमने भी अपनी कावड़ ससम्मान रख दी। इसके बाद गीले कपड़े बदल सूखे कपड़े पहने तथा गीले कपड़ों को सुखाया। शाम को हमें पुनः नहाना है। और यह क्रम 6 दिन चलना ही है।

मेरे साथी आराम करने के मूड में थे और मैं संघ की शिकंजी बनाने में सहयोग करने लगा। कुछ देर बाद मैने भी शिकंजी ग्रहण की और लेखन कार्य करने लगा। भोजन का बुलावा आ गया है। भोजन स्थल पर धूप गर्मी और मक्खियों से बहुत परेशानी रही। मैं दो रोटी खाकर ही उठ गया। इन्हीं कारणों से हम सो भी नहीं पाये। शाम 4 बजे हम कावड़ यात्रा शुरु करेंगें जब तक ठंडक आ ही जायेगी। हमारा संघ प्रतिवर्ष सावन के प्रथम सोमवार को ही कावड़ भरता है।

हमारे इस कावड़िया संघ में चिड़ावा के 34, इटारसी के 22, जबलपुर के 11, बारां के सात सहित कुल 94 यात्री एक चौके में खाना खा रहे हैं। आज यहां सुल्तानगंज में मद्रास, इटारसी, दिल्ली, मरकटियागंज (जिला चंपारन–बिहार), आदि स्थानों के यात्री आ कर मिले हैं। वैसे तो सभी भक्त अपने–अपने हिसाब से भोले बाबा व गंगा मैया की भक्ति करते ही हैं फिर भी कावड़ यात्रा के इन सामान्य नियमों का लगभग सभी लोग पालन करते हैं।

कावड़ यात्रा के नियम

1. स्नान के बाद धुले वस्त्र पहन कर ही कावड़ उठाना।
2. सोकर उठने एवं शौच से आने के बाद स्नान करके ही कावड़ के हाथ लगाना।
3. कावड़ सिर्फ आगे की ओर बढ़ेगी, पीछे नहीं लौटेगी।

4. कुत्ते के छूने से कावड़ अपवित्र हो जाती है।
5. कावड़िये तेल, साबुन, जूते चप्पल तथा विलासिता की सभी वस्तुओं का त्याग करते हैं।
6. कावड़िये साक्षात् भगवान शिव का रूप माने जाते हैं। कावड़ के दौरान कोई भी कावड़िये से प्रणाम् स्वीकार नहीं करता है।
7. कावड़ में कंधा बदलने पर सिर के ऊपर से नहीं निक. ालते। आगे से या पीछे से लेकर ही कंधा बदलते हैं।
8. कावड़ यात्रा के दौरान ताश, शतरंज आदि खेलना, अखबार या गैर धार्मिक किताबें पढ़ना, मांस मदिरा या नशा वर्जित माने गये हैं। पर इस नियम का कई लोग पालन नहीं कर पाते।
9. खाने, पीने, या पेशाब करने के लिये रुकने पर कावड़ को पवित्र साफ जगह पर रखा या इस हेतु बने विशेष स्टैण्ड पर टांगा जाता है। कुछ खाने पीने या पेशाब करने के बाद कावड़ उठाने से पूर्व पवित्री से शरीर पर जल छिड़का जाता है। कान पकड़ कर एवं हाथ जोड़ कर प्रभु से मानवीय कमजोरियों के लिये क्षमायाचना की जाती है।
10. यात्रा के दौरान चारपाई, गद्दे पर सोना, दाढ़ी व हज. ामत बनाना वर्जित है।
11. चमड़े का कोई सामान साथ नहीं रखना चाहिये।
12. अपवित्र तथा गंदे शब्द नहीं बोलना, सदैव 'बोलबम' का नाम जपना चाहिये।
13. प्रातः कावड़ उठाने से पूर्व तथा रात्रि में शयन से पूर्व कावड़ पूजा एवं आरती करना चाहिये।

14. कावड़ यात्रा एक तपस्या है। यही भाव मन में रखना चाहिये।

डाकबम

24 घंटे के अंदर बिना रुके सुल्तानगंज से देवघर पहुंच कावड़ चढानेवालों को डाक बम कहते है। इन्हें प्रशासन तथा जनता से विशेष सम्मान तथा सहयोग मिलता है। देवघर में भी इन्हें पहले कावड़ चढ़ाने का अधिकार प्राप्त है। वैसे लगभग 50 प्रतिशत डाकबम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। डाकबम रास्ते में कुछ नहीं खा पाते हैं। शौच जाना या सोना तो मुमकिन ही नहीं है। पानी, शर्बत, शिकंजी या फलों का रस भागते–भागते ही लेते हैं। डाकबम बहंगी या कावड़ नहीं उठाते बल्कि इनकी बनियान में कंधे पर बनी दो जेबों में गंगाजल की डिबियां रहती है। चलने में सहारे के लिये अकसर हाथ में लकड़ी ले लेते हैं। डाकबम के कंधे पर टॉर्च बंधी झूलती रहती है जो रात में रास्ता देखने के काम आती है। प्रायः डाकबम दल के रूप में चलते हैं। इनका अनुभवी मुखिया आगे–आगे सीटी बजाकर रास्ता बनाता हुआ चलता है। इस तरह उनके हाथ तथा कंधे पूर्णतः स्वतंत्र रहते हैं। चाचा ओम्जी साबू के अनुसार डाकबम का सुल्तानगंज में रजिस्ट्रेशन होता है जिस पर समय दर्ज किया जाता है। बिना रुके 108 किमी पैदल चलना ही अपने आप में जीवट का काम होता है। प्रशासन रास्ते में बीमार व अशक्त हुये कावड़ियों को वाहनों से गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्था करता है।

कावड़यात्रा नंगे पैर पैदल की जाती है। इससे हमें धरती मां से जुड़ने का अवसर मिलता है। प्राकृतिक चिकित्सा के हिसाब से नंगे पैर चलने के स्वास्थ्य सबंधी कई लाभ अनायास ही मिल जाते हैं। लगातार जूते पहनकर जिंदगी गुजारनेवालों के लिये नंगे पैर चलना कोई आसान काम नहीं है। कई लोगों के पैरों

में छाले हो जाते हैं।

सुनने में आया है कि दो दिन पहले नेपाल की तेरह साल की डाकबम लड़की ने रिकार्ड साढ़े तेरह घंटे में कावड़ चढ़ा दी। दुखद समाचार यह मिल रहा है कि कावड़ चढ़ा कर मंदिर से बाहर आते ही उसकी मृत्यु हो गई। हमारा संघ छठे दिन कावड़ चढ़ाता है। बिहारी मेहनतकश लोग तीसरे दिन कावड़ चढ़ा देते हैं। हम अलग से जाकर चौथे पांचवें दिन आराम से कावड़ चढ़ा सकते हैं। संघ के बिना अकेले जाने में भोजन व आवास की समस्या रहती है। यहां अपने साधनों से अकेले आने वाले यात्री पहले अपना सामान देवघर में रखते हैं फिर बस से सुल्तानगंज आकर कावड़ भरते हैं।

मासूमगंज

तारीख 17 जुलाई सोमवार 1995– दोपहर एक से तीन बजे तक का समय आराम करने के लिये नियत था पर हम सो नहीं सके। तीन बजे हमने अपने सामान सूटकेस में तालाबंद कर बस में रख दिये। सवा चार बजे हम कावड़ उठा यात्रा पर निकल पड़े। मैं रास्ते में एक बार विराम लेकर 6.15 पर 8 किमी दूर हमारे रात्रि विश्राम स्थल देवी मंदिर (मासूमगंज, प्रखंड तारापुर, जिला मुंगेर बिहार) पहुंच गया। मेरे साथी बिना विश्राम लिये 6 बजे से पहले यहां पहुंच चुके थे। दस मिनट के आराम के बाद हम मंदिर के बाहर सड़क किनारे एक होटल की बेंच पर आ बैठे। सामने चींटियों के जैसी एक अटूट कतार भगवा वस्त्रधारी कावड़ियों की चल रही है। इसमें स्त्री–पुरुष बच्चे सभी कांधे पर कावड़ या बहंगी लिये तेजी से अपने लक्ष्य की ओर दौड़े चले जा रहे हैं। कम से कम शिवरात्रि तक तो यह कतार नहीं टूटेगी। रात के बारह बजे भी कावड़िये झुनझुन करते बढ़ते दिखाई देते हैं।

कई व्यक्ति दंडवत प्रणाम् करते हुये बाबाधाम की ओर बढ़ते हैं। इनकी कावड़ एक महिने में चढ़ती है। पहले ये लोग दंडवत् करके आगे बढ़ते है। फिर कावड़ को पीछे से उठा कर सामने रखते हैं। कितने महान तपस्वी हैं ये लोग। शायद अर्जुन ने भी ऐसी ही कोई तपस्या की थी जिससे किरातवेशधारी भोले ने उन्हें दर्शन दिये थे। कैसा अद्‌भुत विश्वास और श्रद्धा है यह? क्या भोले नाथ ने पूरे पानी में ही भांग मिला दी है जो सब लोग पागल से हो उसकी ओर दौड़ रहे हैं। गत वर्ष 45 दिन में 85 लाख कावड़ चढ़ी थी। प्रति मिनट पचास कावड़। इस संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही विकास हो रहा है यात्रा मार्ग के गांवों कस्बों का। यहां सड़क किनारे कदम–कदम पर दुकानें हैं। यात्रियों को चाय, नाश्ता, आराम करने की और कावड़ टांगने की जगह उपलब्ध है।

इस मुकाम पर संघ के रात्रि खाने या नाश्ते की व्यवस्था नहीं होती है। मुझे भूख लगी थी। साथियों के साथ बाजार जाकर केले एवं बिस्कुट खाये। वापस देवी मंदिर लौटे तो हमें आरती होती हुई मिली। हाथमुंह धो कुल्ला कर आरती में आया और सबसे अंत में मैने आरती की। आरती के बाद भजन संगीत होता है। जबलपुर वाला दल शमां बांध देता है। हरदा का गायक अशोक अग्रवाल बम इटारसीवालों के साथ आता है। दोनों दलों में मुकाबला सा होता है। महावीर चित्तौड़ा पचास रु. में एक ढपली खरीद लाया है। संगीतकार गोपाल ने उसका बखूबी उपयोग किया। ''मां . . मां . . मां. । हाथ में सोटा लाल लंगोटा बजरंग मारे किलकारी मां।'' मैं भजन याद नहीं रख पाया ।

घंटे भर बाद मैं लेटकर सोने का प्रयास करने लगा पर नींद कैसे आती? इसके बाद डाक्टर सुदर्शन साबू का मेडिकल बक्सा खुला। मैने गला खराब होने पर हाल्स गोली चूसी तो

सभी साथी लोग भी हाल्स के लिये मचल पड़े। कईयों के पैरों में छाले पड़ गये है। वहां दर्द निवारक दवा का छिड़काव हो रहा है। चित्तौड़ा की पीठ दर्द में भी स्प्रे किया गया। डाक्टर साबू सलाह दे रहे हैं, 'रुको मत, लगातार चलते रहो, रास्ते में कुछ खाओ पीओ नहीं।' मैं तुरंत प्रतिवाद कर अपना मत बताता हूं, 'रुकते–रुकते और खाते–पीते चलो।' साबू मुझे डांटता है, गलत सलाह मत दो।' मैं उसे डांटता हूं, 'गलत रास्ते मत बताओ।' हमारी ऐसी प्यार भरी नोंक झोंक चलती ही रहती है।

हम सो जाते हैं। रात में पानी आ जाता है। तारे दिखाई दे रहे हैं और पानी आ रहा है। 'पानी ज्यादा नहीं आना चाहिये।' हम यह सोचकर पड़े रहते हैं। देखते ही देखते तारे गायब हो जाते हैं और बिजलियां चमक उठती हैं। काले–काले घने और चमकदार बादल। अब खैर नहीं। उठो और भागो । पर कहां? तिबारियां तो सारी पहले से ही रुकी हुई हैं। सुदर्शन बोला, 'चाचाजी मैंने आपसे पहले ही कहा था न।' पर अब चाचाजी भी क्या करें। और कहा तो सभी से ही था। तिबारी में गर्मी लगती है, इसीलिये हमने चौक में सोना पसंद किया। सावन में बारिश की जोखिम तो होती ही है पर तब मौसम बिल्कुल साफ था। मंदिर में बरामदे बहुत छोटे–छोटे और कम हैं। मंदिर के आगे कावड़े रखी हुई हैं। उसके पास थोड़ी सी कच्ची ढंकी हुई जगह खाली है। हम सब वहां घुस गये। बाद में तीन जने दिल्लीवाले बम रविशंकर की बनाई जगह पर ठुंसे। हम परेशानी में रहे। पानी रुकते ही बाहर आ जाते और आते ही अंदर। रात बड़ी कठिनाई से कटी। तीन–चार बार ऐसा हुआ और सुबह उठने की सीटी बज गई। सुबह साबू ने बताया कि वो रात में पानी से बचने के लिये भागते समय गुरुजी से टकरा गया। गुरुजी धड़ाम से जमीन पर गिर पड़े। बम भोले की कृपा से उन्हें चोट नहीं आई। साबू को इस घटना पर बहुत ग्लानी हो रही थी।

चाचा ओम्जी साबू ने सवेरे बताया कि रात आप लोग जिस जगह सो रहे थे वहां लकड़ियां, छाणे तथा कबाड़ा भरा हुआ था। बरसात में ऐसे स्थानों पर सांप, बिच्छू, मांदल आदि जीव हो जाते हैं। यदि हम उस जगह को दिन में देख लेते तो रात में वहां घुसने का साहस ही नहीं करते।

गनैड़ी

आज दिनांक 18. जुलाई 1995 मंगलवार हमारा दिन संभवतः प्रातः तीन बजे से शुरु हुआ। घड़ी नहीं है, बिजली चली गई है और बार–बार बरसात आ रही है। सारा सामान अस्तव्यस्त है। मेरी आंखों में नींद के कारण जलन हो रही है तथा मुझे ठंड लग रही है। पर उठना तो पड़ेगा ही। यहां नहाने धोने के पानी की भारी कमी है। बरसात में ही सब नहा लिये। आरती के बाद साढ़े चार बजे कावड़ यात्रा शुरु हो गई। मैं गलती से दिल्लीवाले खन्ना बम की कावड़ उठा लाया। बुजुर्गों की सलाह ले उसे वापस रख अपनी कावड़ लाया। सुदर्शन मेरे इंतजार में रुका बाकी साथी आगे जा चुके थे। असरगंज ग्राम तक (करीब छः किमी तक) हम साथ रहे बाद में मैं हम आठ यात्रियों के उपदल में सबसे पीछे रह गया। आज मेरा झोला भारी है। इसमें गीले कपड़े भरे हैं। बरसात में भीगने के डर से मेरे साथियों ने तो गीले कपड़े पहन कर ही कावड़ उठा ली थी पर मैंने बुखार के डर से सूखे कपड़े पहन रखे हैं। आगे करीब आठ किमी बाद बरसात आ गई। मेरे साथी भीगते हुये आगे बढ़ गये और मैं भीगने से बचने के लिये एक दुकान में घुस गया। बारिश रुकने पर आगे बढ़ा तो हमारा साथी ठाकुरिया बम एक दुकान पर ज्यूस पीता हुआ दिखाई दिया। मैं उसे पीछे छोड़ बढ़ गया। तारापुर प्रमंडल मुख्यालय पर मैंने दूध लिया। यहां से कैलास बम मेरे साथ हो गया। हम आठ बजे हमारे आज के विश्राम स्थल गनैड़ी ग्राम के प्राइमरी स्कूल में पहुंच गये। बालमुकुन्द

ठाकुरिया मेरी सलाह पर आराम करते हुये चलता है। वह साढ़े नौ बजे मुकाम पर पहुंचा। उसके दोनों पैरों में पट्टियां बंधी हुई है। छाले तो नहीं पड़े हैं पर नंगे पैर चलने से पांवों में जलन होने लगी है।

गनैड़ी प्राइमरी स्कूल का यह भवन बैद्यनाथ कावड़ संघ ने बनवाया है। पहले यहां केवल खाली जमीन और कुंआ ही था। परस्पर चंदा कर दस वर्ष पूर्व तीन बड़े कमरों का निर्माण करवाया गया और चार वर्ष पूर्व दो कमरे और बनवाये गये। कमरों के सामने बरामदा है तथा पूरी जमीन पर चारदीवारी तथा पक्का फर्श है। हमारे आने के कारण आज स्कूल बंद हैं। यहां पांचवी तक की कक्षाऐं लगती है। 1993 की यात्रा में भी हम यहीं रुके थे। यहां हमारा संघ रास्ते से गुजरने वाले कावड़ियों को (कावड़ यात्रियों को) दो घंटे तक शिकंजी पिलाता है।

हमारे युवा साथी प्रदीप व महावीर चित्तौड़ा यहां जल्दी पहुंच कर हमारे सोने के लिये प्लास्टिक शीट बिछा कर अच्छी सी जगह रोक लेते हैं। रस्सी बांधकर गीले कपड़े सुखा दिये गये। इस यात्रा में गीले कपड़े सुखाना बहुत बड़ा काम रहता है। कम से कम दो बार नहाना, कपड़े सुखाने की जगह नहीं मिलना, सावन की बरसात में बार बार भीगना। आज मेरा व चाचा ओम्जी का बहुत समय कपड़े सुखाने में ही बीता। एक बम बाहर तख्ते पर बैठा–बैठा बाद में आने वाले साथी बमों को गन्तव्य आने की सूचना देकर बुलाता रहता हैं।

गनैड़ी स्कूल पहुंचते ही हमें शिकंजी तैयार मिली। बाद में कचोरी छोले तथा चटनी का भरपेट नाश्ता हुआ। खा–पीकर सब आराम करने हेतु लेट गये। हमारे साथियों ने अपने पैरों पर आयोडेक्स मली।

आज यहां विशेष कार्यक्रम किये गये। सामने हनुमानजी के मंदिर में पूजा की गई। बहुत देर तक भजन गाये गये। दो

घंटे तक रास्ते में गुजरने वाले कावड़ियों को शिकंजी पिलाई गई। भोजन में चूरमा दाल तथा पूरी सब्जी बनी। आज खाना तीन बजे शुरु हुआ। खाने में आज हमारे संघ के अलावा अन्य मेहमान भी थे। शायद दूसरे दल के चिड़ावा की तरफ के कावड़िये ही हों। आज अहमदाबादवासी एक और कावड़िया हमारे संघ में आ मिले। चाचाजी ने बताया कि ये मुरारीलालजी डांगा हैं। ये मूल रूप से लक्ष्मणगढ़ जिला सीकर राजस्थान के हैं पर अभी अहमदाबाद में बस गये है और इनका वहां सीमेंट का बड़ा कारोबार है। अब हमारा संघ 92 कावड़ का हो गया है। डांगाजी आज प्रातः चार बजे सुल्तानगंज से कावड़ भरकर चले हैं और 24 किमी चल कर 11 बजे गनैड़ी स्कूल में हमारे संघ से आ मिले।

आज मुझे कुछ जानकारियां मिली हैं। हमारे इस संघ की कावड़यात्रा हर साल सावन के प्रथम सोमवार से ही शुरु होती है। अर्थात् हमारा संघ सुल्तानगंज से सोमवार को ही जल भरता है। हमारे गुरुजी उर्फ मामाजी परमेश्वरदयालजी का चिड़ावा में घी, शक्कर आदि का थोक कारोबार है तथा दिल्ली में एम्ब्रीपेपर बनाने की मील व कश्मीरी गेट पर मोटर पार्ट्स की दुकान भी है। आप के दो पुत्र हैं, एक चिड़ावा तथा दूसरे दिल्ली का कारोबार देखते हैं। गुरुजी इस उम्र में भी कावड़ लेकर बहुत तेज चलते हैं। संघ ने उनका नाम राजधानी (भारतीय रेल्वे की सबसे तेज चलने वाली गाड़ी) रख रखा है। गुरुजी सारे सामान बस में रखवा, बस रवाना करने के बाद कावड़ उठाते हैं और लगभग बिना रुके सबसे पहले आगामी विश्राम स्थल पहुंच जाते हैं। उनके साथ कोई न कोई चिड़ावा का साथी रहता ही है। इस वर्ष उनका साथ दे रहे हैं श्री नृसिंह जी अग्रवाल। आप भी मामाजी के साथ ही कावड़ उठाते हैं और उनके साथ ही मुकाम पर पहुंच जाते हैं।

गुरुजी के खास साथी रघुवीरजी बाचुका (अग्रवाल) चिड़ावा के मिर्ची के थोक व्यापारी हैं। उन्होंने संघ में साथ चल रहे कर्मचारियों में से एक को अपने पक्ष में कर रखा है। विवादों को देखते हुये मुझे लगता है शायद वे आगे से इस यात्रा पर साथ नहीं आयेंगें।

सुदर्शन ने एक घटना और बताई। आज परोसगारी करते समय उसने पंक्ति का उल्लंघन कर आगे बैठे जबलपुरवालों को एक पुड़ी रख दी तो चिड़ावावाले नाराज हो गये। जबलपुरवालों ने कहा कि नहीं पहले चिड़ावावालों को ही परोसो हम तो बाद में खा लेंगे। संघ में बात चर्चा का विषय बनी।

सुरेशजी अग्रवाल चिड़ावावाले संघ में न जाने क्यों लब्दू बम के नाम से जाने जाते हैं। आप मुकाम पर सबसे अंत में पहुंचते हैं। अक्सर देर से उठते हैं तथा संघ की आरती में भी शामिल नहीं हो पाते। अपनी मर्जी जब कावड़ उठाते हैं और अपनी मर्जी जहां रास्ते में सो जाते हैं। आप संघ में सबसे ज्यादा हंसमुख प्रौढ़ हैं। आप के साथ एक बक्सा सामान चलता है जो आप रास्ते में बांटते हैं। बिहार की महिलाओं को मेंहदी के पैकेट तथा बच्चों को खिलौने आप उपहार में हर वर्ष देते हैं।

नरकटियागंज से दो यात्री आते हैं। उनमें एक हैं वामन बम। आपका कद बहुत कम है तथा भगवान ने शरीर में और भी बदलाव कर रखे हैं। इसके बावजूद आप बहुत मस्त व मिलनसार हैं तथा कई बार गुरुजी के साथ कावड़ लेकर दौड़ते हैं।

हमारे एक युवा साथी हैं–रविशंकरजी मालानी। सुदर्शन इन्हें मामाजी कहता है तो हम भी रवि मामा या रवि बम कहते हैं। आप गुरुजी परमेश्वरलालजी मालानी के सगे चाचाजी के पुत्र हैं। कुछ वर्ष पूर्व आपकी टांग की हड्डी टूट गई थी। मन्नत मांगी कि ठीक हो जाऊंगा तो हर वर्ष कावड़ चढाऊंगा। बस उसी मन्नत को निभा रहे हैं। मात्र 34 साल की उम्र। कई

सालों से कावड़ चढ़ा रहे हैं। 1993 की मेरी यात्रा में और अभी भी मामा रविजी हमारा बहुत सहयोग कर रहे हैं। मैं इनका बहुत आभारी हूं। आप चौधरी सूरजाराम एंड संस (फरीदकोट कॉटन फैक्टरी) पोस्ट बॉक्स नम्बर 4, मलोट, पंजाब में मैनेजर के पद पर हैं।

इटारसी से जगदीशजी लखौटिया आते हैं जो मित्र सुदर्शन साबू के छोटे भाई बजरंग साबू के चाचा श्वसुर हैं।

हमारे दिल्ली से आये युवा मस्त सहयात्री अरुण खन्ना इस वर्ष पांचवीं कावड़ चढ़ा रहे हैं। इनका पता 3855/1 शाहगंज, डस्टबिन के सामने, जी.बी.रोड के पीछे प्याऊ देहली 6 है। इनका फोन नम्बर 733660 तथा 5136792 हैं। अरुणजी खन्ना मूल रूप से पंजाबी हैं। आपकी दिल्ली में अजमेरी गेट के अंदर वाले बाजार में आरामशीन के पार्ट्स की दुकान है। आप जबलपुरवाले जगदीश मामाजी को पार्ट्स सप्लाई करते हैं और उनकी प्रेरणा से ही यात्रा करने लगे।

यहां तारापुर प्रमंडल के विधायक श्री शकुनी चौधरी अभी इस स्कूल की छत पर बैठे हैं। उनके साथ दो बंदूकधारी बॉडी गार्ड हैं। ये लालू विरोधी समता पार्टी (जार्ज फर्नांडिस ग्रुप) से चुने गये हैं। उनका गांव असरपुरा के पास है। विधायकजी को. इरी जाति के हैं जो यहां बैकवर्ड क्लास में आती है। मतगणना के समय कांग्रेस प्रत्याशी समेत छः लोगों की हत्या हो गई थी। जनता में चर्चा है कि लालू विरोधी होने के कारण विधायकजी व इनके पांच रिश्तेदारों को अभियुक्त बनाकर फंसाया गया हैं, जो सभी अभी जमानत पर हैं।

इस सरकारी स्कूल में एक से पांचवीं तक पांच कक्षाओं को पढ़ाने के लिये सिर्फ दो ही अध्यापक नियुक्त हैं। दूसरे प्राइवेट स्कूलों में भी कावड़िया दल आने पर बच्चों की छुट्टी कर दी जाती है। सारी बातें वहां के अध्यापकजी, होटल वाले तथा एक

मजदूर से पता लगी।

मैं दिन में नहीं सो पाया। रात स्नान के बाद आरती की गई और उसके बाद मुझे अच्छी नींद आई।

चिड़िया महादेव

19 जुलाई 1995 बुधवार। प्रातः सवा चार बजे कावड़ कंधे पर रख प्रस्थान कर चुके थे। चार किमी बाद रामपुर नामक गांव से नहर किनारे का कच्चा रास्ता शुरु होता हैं। यहां दोनों ओर वृक्ष लगे होने से हरियाली है। आठ किमी मार्ग तय कर कुंवरसाल नामक गांव पहुंचे। कुंवरसाल मुंगेर जिले में है। यहां प्रशासन ने कावड़िया विश्राम हेतु धर्मशाला बना रखी है। कुंवरसाल गांव के एक ओर कुंवरसाल नदी बहती है। नदी में अभी एक फुट तक पानी है। यहां हमने फोटोग्राफर्स से फोटो खिंचवाये। ये फोटो हमें देवघर वैद्यनाथ धाम में मिल जायेगें। कुंवरसाल नदी पार करते ही बिहार का बांका जिला शुरु हो जाता है। यहां धौरा नामक स्थान पर अग्रवाल मारवाड़ी सेठ इंद्र चन्द्र जी द्वारा विशाल धर्मशाला बनवाई गई है। धर्मशाला पार करने के बाद हमने दायीं ओर का रास्ता पकड़ा ताकि हम चिड़िया महादेव नामक स्थान पर पहुंच कर दर्शन कर सकें। बाईं ओर का मुख्य रास्ता जलेबिया मोड़ होकर आगे बढ़ता है जिससे होकर अधिकांश कावड़िये गुजरते हैं। संकरी गंदी सी पगडंडी, तीन गांवों की गलियां, खेत खलिहानों की ऊंची नीची मेड़ों से गुजर आखिर हम चिड़िया महादेव नामक स्थान पहुंचे। यहां किसी के भी रास्ता भूलने का डर था अतः हम सब साथ रहे। यहां बहुत अच्छा प्राकृतिक वातावरण है। आम के बाग, हरे भरे खेत और मैदान तथा ठंडी हवाऐं। चिड़िया महादेव के पुजारीजी ने इस स्थान का महात्म्य बताने वाली कथा सुनाई। सभी यात्रियों से दक्षिणा ली तथा अपनी पोथी में हमारे नाम पते लिखे।

'कभी कोई कावड़ यात्री रास्ता भूल कर घने जंगल के इस छोटे से महादेवजी के मंदिर में आ विश्राम करने लगा। महादेवजी की पिंडी पर एक चिड़िया का बच्चा चोंच फाड़कर जोर–जोर से चीख रहा था। यात्री ने बच्चे को प्यासा जान उसे कावड़ के साथ की पवित्री से जल पिलाया। चिड़िया का बच्चा गायब हो गया और साक्षात् भगवान शिव प्रकट हुये। उन्होंने यात्री को आशीष दिया तथा इस स्थान को चिड़िया महादेव के नाम से प्रचारित करने व मंदिर बनाने का आदेश दिया। उसके बाद कावड़ यात्री यहां आकर पवित्री से भगवान शिव को जल चढ़ाने लगे।'

यह चिड़िया महादेव की कथा है। हम भी भगवान शिव को पवित्री का जल चढ़ाने आये हैं। यहां हमें मारवाड़ी कावड़ियों के अलावा अन्य कावड़िये कोई आते नहीं दिखाई दिये। अभी सिर्फ आठ बजे हैं। हम कुंवरसाल नदी से दो किमी आगे ही पहुंचे हैं। चिड़िया महादेव पर मेरा चौथा विश्राम है। यहां से चार पांच किमी चलने के बाद हम पक्की सड़क के किनारे बसे साहिबगंज कस्बे में पहुंचे। यहां से सीधी सड़क बिज्जु खरवाह के हनुमान डेम व हनुमान मंदिर होती हुई जलेबिया मोड़ जाती है। इस तरह चिड़िया महादेव दर्शन करने के लिये हमें पांच किलोमीटर अधिक चलना पड़ता है।

साहिबगंज से हम सुल्तानगंज–देवघर मुख्य हाईवे पर आ गये। हमारी बस यहां से आगे गुजर चुकी है। कावड़ियों के लिये नहर के किनारे से जलेबिया मोड तक कच्चा छोटा मार्ग बनाया जाता है। सुल्तानगंज से यहां तक की यात्रा में मुझे बार–बार दिशाभ्रम हो रहा है।

बिज्जू खरवाह

साहिबगंज से हमारे आज के विश्राम स्थल बिज्जूखरवाह तक पक्की सड़क (हाई वे) काफी संकरी है। वाहन आने पर

कावड़ियों को नीचे उतरना पड़ता है जहां पैरों में कंकर चुभते हैं और कई जगह कीचड़ है। पद्यात्रियों के लिये यह रास्ता बहुत कठिन है। हमें तीन किमी में घंटाभर लग गया। बिज्जूखरवाह (जिला बांका) में हनुमानजी के मंदिर के आसपास कई बरामदे हैं। वहीं हमारे जल्दी आनेवाले साथियों ने जगह रोक रखी है। हमारे युवा साथी प्रदीप, महावीर और रवि मामा यहां साढ़े नौ बजे ही पहुंच गये थे। सुदर्शन, ओम् चाचाजी व कैलास बम मेरे साथ थे। हम दस बजे मुकाम पर पहुंचे। बालमुकंद ठाकुरिया बम आश्चर्यजनकरूप से हमारे से सिर्फ आध घंटे बाद ही आ पहुंचा। आज हमारे भगत बम ठाकुरियाजी बहुत तेज चले। आते ही नाश्ता मिल गया। इस बरामदे के ऊपर पुवाल का छपरा है। हमने आज 26 किमी की दूरी तय की है पर थकान नहीं है। दोपहर भोजन में खिचड़ी रोटी मिली। नहाने के लिये हम नहर पर चले गये। खूब मिट्टी लगा–लगा कर नहाये।

हमारे संघ का सूरजगढ़वासी एक बम जो पहली बार ही यात्रा पर आया है, यहां बिज्जूखरवाह में हमारे संघ के साथ नहीं मिल सका। उनका कोई समाचार भी नहीं है। खोज खबर जारी रही। देर रात पता लगा कि वे सीधे जलेबिया मोड़ पहुंच कर वहां विश्राम कर रहे हैं। अधिकांश यात्री जलेबिया मोड़ पर ही विश्राम लेते हैं। वहां सुविधायें भी ज्यादा हैं और भीड़ भी। आज यहां बिज्जु खरवाह हनुमान मंदिर पर भारी भीड़ है। हमारे से पूर्व ही एक ओर बस की सवारियां यहां आकर ठहर चुकी थी।

सुईयां पहाड़ी

तारीख 20. 7.1995 गुरुवार सुबह हम बिज्जुखरवाह से कावड़ ले कर आगे बढ़े। थोड़ी देर पहले आरती के समय बरसात हो रही थी। अब बारिश बंद हो गई है। आज हमें पहाड़ी रास्ता पार करना है। पहले जलेबिया मोड़ आता है।

यहां यात्रियों के लिये सर्वाधिक सुविधायें उपलब्ध है। अस्थाई दुकानों का बहुत बड़ा मेला लगा हुआ है। रास्ते के दोनों ओर हरी भरी उत्पत्यकायें बिछी हुई हैं। इसके बाद सुईयां कस्बा आता है जो प्रशासनिक तौर पर बांका जिले में है पर यह भ. ागलपुर का हिस्सा माना जाता है। सुईयां कस्बा सुईयां पहाड़ी पर बसा है। पहाड़ी का नाम सुईयां क्यों रखा गया? यहां चलते समय पहाड़ी के पत्थर सूई की तरह पैरों में चुभते हैं। यहां की हरियाली और घुमावदार रास्ते देख मुझे हाड़ौती की प्रसिद्ध दरा नाल की याद आ गई। बस की पक्की सड़क घुमावदार रास्तों से जाती है और पैदलयात्री शार्टकट से चढ़ते है।

अभी सुबह आठ बजे मैं मारवाड़ी युवा मंच झाझा द्वारा लगाये कावड़िया सेवा शिविर के विशाल पांडाल में बैठा हुआ हूं। ऐसा विशाल व साफ सुथरा पांडाल अभी तक इस यात्रा में मैंने नहीं देखा है। पूरा पांडाल बांसों, रस्सीयों और तिरपालों से बनाया हुआ है। यहां हजारों कावड़ियों के एक साथ विश्राम की व्यवस्था है। पूर्व में यात्रा आने पर भी मैं इस पांडाल में एक घंटा रुका था। सुदर्शन और मैं दोनों सुईयां पहाड़ी से साथ–साथ आ रहे हैं। यहां कैम्प में सुदर्शन उसके दर्शन शास्त्र के हिसाब से मात्र पांच मिनट रुककर आगे बढ़ गया है। मैं अपने दर्शन के हिसाब से यहां रुक कर आनंद ले रहा हूं।

कावड़ टांगने के बाद हमने यहां गर्म पानी के हौज में पांव लटकाकर अपने पैरों की सिकाई की। सामने दवाखाना है जहां दसेक कुर्सियां रखी हुई है जिन पर चिकित्सा लेने आये कावड़िये बैठे हुये हैं।। प्राथमिक चिकित्सा बक्सा तथा बहुत सारी दवाइयां मेज पर फैली हुई हैं। इसके बगल में लगे स्टाल पर यात्रियों को जीरा सिप तथा नीबू की शिकंजी पिलाई जा रही है। पास ही पीने के साफ ठंडे पानी तथा चाय की व्यवस्था भी है। दायीं

ओर एक टंकी से पाइप लगाकर स्नान की व्यवस्था की गई है। पैर सेंकने का पानी बड़े बड़े कड़ाहों को लकड़ी की भट्टियों पर रखकर गर्म किया जा रहा है। बिजली की व्यवस्था हेतु जरनेटर चालू है। जरनेटर की सुरक्षा के लिये टीनशेड तथा तिरपाल से अलग कक्ष सा बनाया गया है। पांडाल के चारों ओर बैरीकेट्स लगाये गये हैं।

किसी भी पद्यात्रा में नारे जोश भरने का काम करते हैं। यहां का प्रमुख नारा या अभिवादन 'बोलबम' है ही। आपस का मुख्य संबोधन बम या बमजी है। इसके अलावा दो नारे और ज्यादा लगते हैं

बाबा नगरिया दूर है, जाना जरूर है।
बोल बम का नारा है, बाबा एक सहारा है।

क्या पढोगे? बोलबम। क्या लिखोगे? बोलबम। क्या बोलोगे? बोलबम। आगे भी बोलें, बोलबम। पीछे भी बोलें, बोलबम। बढ़े कदम . ., पार करेगा . .,जटाधारी. . ,डमरुधारी. .,गंगाधारी. ,. चंद्रधारी. .,नागधारी. ., सबका जवाब बोल बम नारे में है। हम साथी परस्पर एक दूसरे को बम कह कर संबोधित करते हैं जैसे बमजी खाना खा लो , बमजी उठो आदि।

बाबाधाम की कहानी नामक पुस्तक से जानकारी मिलती है कि उत्तर से दक्षिणपूर्व की ओर बहने वाली गंगा नदी सुल्तानगंज में उत्तराभिमुखी या उत्तरवाहिनी हो जाती है। जहां भी नदियां अपने प्रवाह से विपरीत दिशा में बहती है वहीं हमने तीर्थ बना दिया है। वाराणसी में भी ऐसा ही है तथा चंबल किनारे बसा हाड़ौती का प्रसिद्ध केशवरायजीपाटन भी इसीलिये तीर्थ है। इस कावड़ यात्रा की शुरुआत अजगैबीनाथजी के मंदिर से मानी गई है। यह मंदिर सुल्तानगंज में गंगा के किनारे ही है। इस वर्ष गंगा में ज्यादा पानी होने के कारण हम उस मंदिर में नहीं जा सके। कई लोग नावों से या तैर कर जा रहे थे। पुस्तक के अनुसार

बाबाधाम कावड़ यात्रा का रास्ता इस तरह है– अजगैबीनाथ से कमराय 6 किमी, .मासूमगंज 2 किमी, .असरगंज 5 किमी, रणगांव 5 किमी, तारापुर 3 किमी, माधोडीह 2 किमी, रामपुर 5 किमी, कुंवरसाल (कच्चारास्ता) 8 किमी, विश्वकर्मा टोला 4 किमी, महादेवनगर 3 किमी, चन्दननगर 3 किमी, जलेबिया मोड़ 2 किमि, टंगेश्वरनाथ 5 किमी, सुईयां 3 किमि, शिवलोक 2 किमि, अबरकिया 6 किमी, कटोरिया या कावड़िया धर्मशाला 8 किमी, लक्ष्मणझूला 8 किमी, इनारावरण 2 किमी, भूलभुलैया 3 किमी, गुडयारी 5 किमी, पटनिया धर्मशाला 5 किमी, कलकत्तिया ध र्मशाला 3 किमी, भूतबंगला 5 किमी, दर्शनिया 1 किमी, बाबाध ाम 1 किमी। कुल 105 किमी।

अबरखा किंवदन्ती है कि हजारों वर्ष पूर्व अजगैबीनाथजी के मंदिर में एक साधु का आवास था। वे नित्य प्रति कावड़ में गंगाजल भरकर ले जाते तथा वैद्यनाथधाम में भोले को जल चढाने के बाद ही भोजन ग्रहण करते थे। देखा देखी उनके शिष्यों ने भी यह क्रम शुरु कर दिया और कावड़ यात्रा चालू हो गई।

आज की मेरी यात्रा अच्छी रही। कुल तीन विराम हुये। पहला 15 मिनट का विराम सुईयां से दो किमी पहले हुआ जहां मैंने दो गिलास फीका दूध पीया। दूसरा विराम झाझा के शिविर में लिया। वहां सवा घंटे के आराम में मैंने मात्र एक गिलास जलजीरा ग्रहण किया। झाझा से दो किमी आगे सहयात्री रविशंकरजी ने एक अच्छे बाजार में ' यहां फलों की चाट खाने का महातम्य है' कह कर रोका। वहां केले और खीरा खाया। साढ़े दस बजे मैं आज के विश्राम स्थल अबरखा धर्मशाला (तहसील कटोरिया जिला भागलपुर) पहुंचा। हमारे उपदल का महावीर चित्तौड़ा यहां पूरे संघ में तीसरे नम्बर पर साढ़े सात बजे ही पहुंच गया था। मैं हमारे उपदल में सबसे बाद में पहुंचा। हम सभी का स्वास्थ्य अच्छा चल रहा है।

इस धर्मशाला में आज यहां के मजिस्ट्रेट साहब आये हुये हैं। यहां उनकी अहमियत है। उनके आदेश पर हमारी कावड़े बाहर चौक में ही रखवा दी गई। धर्मशालाओं में ऐसा नियम भी है ताकि कमरे यात्रियों के सोने में काम आ सकें। हम अकसर कावड़ें रखने के लिये अलग से कमरा लेते हैं। बाद में हमारे साथियों ने उनसे दोस्ती की। उन्हें भी चूरमा एवं समोसों का नाश्ता करवाया गया। मजिस्ट्रेट साहब के जाते ही हमने कावड़ें कमरे में रखी।

नाश्ते के बाद शिकंजी पी मैं सवा बारह बजे तक सोया। तीन बजे तक हमने गपशप की। धर्मशाला के बाहर राजनीति की बड़ी–बड़ी बातें होती रही। भारत रिलिफ सोसाइटी का मेडिकल वाहन देख सुदर्शन, चाचाजी व ठाकुरिया अपने पैरों के लिये दवा ले आये। महावीर चित्तौड़ा दो हजार रु. की रसीद कटवाकर इस संस्था का सदस्य भी बन गया। जगदीश मामाजी सभी को सदस्यता लेने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। सुदर्शन परिवार पहले से ही इस संस्था का सदस्य है।

तीन बजे खाना शुरु हो गया। चावल, चपाती, मिस्सी रोटी, पलवल की भाजी, दाल तथा मीठे में रसगुल्ले हैं। मैं गत यात्रा के अनुभवों से सबक ले बहुत ध्यान से खा रहा हूं। आज शाम को ठंडाई छनेगी। इसके लिये दूध भी आ गया है।

बोल बम सेवा समिती दलसिंहसराय (समस्तीपुर) वालों की ओर से अबरखा से दो किमी पहले टोनापाथर गांव में एक विशाल धर्मशाला बनवाई गई है। गत पांच वर्षों में यहां एक दो मंजिला तथा एक तीन मंजिला भवन बन चुका है। हर श्रावणी मेले में यहां विशाल सेवा शिविर लगाया जाता है। यहां अच्छी सुविधायें हैं। फ्लश शौचालय, नहाने के पक्के फर्श वाले स्थान, सोने के लिये बड़े बड़े हॉल, हमेशा पानी की उपलब्धि, चिकित्सालय, पांव सेंकने के गर्म पानी के टब, चाय शर्बत, मालिशिये

तथा तेल, आयोडेक्स, यूथेरिया ट्यूब, व पर्याप्त सेवक। यहां यात्री के बैठते ही सेवक जल, चाय शर्बत आदि के साथ सेवा में हाजिर हो जाते हैं। इन सबसे प्रभावित हो कर ही बारां के बजरंगकुमार साबू ने भी गतवर्ष इस संस्था की सदस्यता ग्रहण की थी। यहां से प्रकाशित पुस्तक में इन बातों का उल्लेख भी है।

रात स्नान के बाद आरती हुई। साबूजी ने जगदीश मामाजी की ओर से पेडे बांटे। घोषणा के अनूरूप ठंडाई भी वितरित हुई, जो धर्मशाला में ठहरे सभी बमों को मिली। इस धर्मशाला में 500 से ज्यादा यात्री ठहरे हुये हैं। आज आरती में विशेष उत्साह रहा। भक्त गण नृत्य में मग्न हो गये। आरती के बाद भजनों का दौर चला। जबलपुर के संगीतकार भजनीक गोपाल पंडित एवं उनका दल ही ऐसा सुमधुर संगीत दे सकता है। मुझे जोर से नींद आ रही है पर मेरे बगल में ही हारमोनियम, ढोलक, ढपली तथा तालियां बज रही है।

इस धर्मशाला के हॉल में हम अच्छी जगह पर लेटे हुये हैं। दो तरफ से खुला होने के कारण अच्छी हवा आती है। बरसात होने पर तो ठंड भी लगने लगती है। इस धर्मशाला में जर्नेटर से बिजली चालू रखी गई है। बिहार में बिजली की दशा बहुत शोचनीय है। गांवों कहीं बिजली जलती नहीं दिखाई देती। मैं ट्यूबलाइट के प्रकाश में बैठ कर लिखने लगा। यहां हम हमारे सामानों को प्लास्टिक शीट से ढककर असुरक्षित छोड़ घंटों इधर उधर घूमते रहते हैं। अभी तक किसी का कोई नुकसान नहीं हुआ। कावड़ को भी कोई नहीं छेड़ता है। कावड़ में हम रुपये, टॉर्च आदि सामान रख निश्चिंत हो जाते हैं।

भजन गायन और खुजली की पुरानी बीमारी के कारण मुझे अच्छी नींद नहीं आई। ढाई बजे तो हमें पुनः जगा ही दिया गया।

गुडयारी

दिनांक 21.7.1995 शुक्रवार हमारी कावड़ यात्रा आज चार बजे ही शुरु हो गई। आज हमें गुडयारी धर्मशाला तक 27 किमी चलना है। सड़क के साथ कावड़ियों के लिये पृथक से कच्चा मिट्टी का रास्ता बना दिया गया है। यहां के निवासियों ने रास्ते की सफाई कर कंकर पत्थर हटा दिये है। वे लोग जगह–जगह पैसे मांगने के लिये बैठे रहते हैं। चलो कुछ काम करके ही तो मांग रहे हैं। मार्ग ऐसा बन जाता है जैसे कालीन पर चल रहे हों। बारह किमी बाद पहला विश्राम इनारावरण में हुआ। पेट की खराबी और थकान के कारण मैं अपने साथियों से बहुत पीछे पहुंच पाता हूं। यहां इनरावरण जिला भागलपुर में श्री बाबा भूतनाथ सेवा निकेतन कलकत्ता वालों की विशाल ध र्मशाला है। इस धर्मशाला में मैंने स्नान किया। आगे गीले कपड़े पहन कर ही चलना पड़ा। वैसे भी बार–बार बरसात आकर हमें भिगो रही है। पूरे रास्ते विशाल सेवा केन्द्र लगे हुये हैं। मुकाम तक पहुंचने की जल्दी में मैं कहीं नहीं रुका। इनारावरण से मैं अकेला अविराम चल कर दस बजे गुडारिया सरकारी धर्मशाला पहुंच गया। भीगे कपड़े सूखने के लिये डालने के बाद मैंने यहां के चिकित्सालय से डायरिया की दवा ली। नाश्ते में सिर्फ पोहा लिया तथा आधा घंटा नींद निकाली। धर्मशाला में शोर बहुत है। मेरी तबियत खराब है। पेट तो खराब है ही पूरा बदन भी दर्द कर रहा है। शायद बुखार आ गई हो।

देवघर पहुंचने से पूर्व यह हमारा अंतिम पड़ाव होता है। हम यहां से कल प्रातः रवाना हो सीधे मंदिर जाकर कावड़ चढ़ा सकते हैं। हमारे दल ने आज ही देवघर के हमारे विश्राम स्थल श्याम भवन, श्याम कीर्तन मंडल, हनुमान टोला (वैजनाथ होटल के सामने) पहुंचना तय किया है। यहां से देवघर अभी कम से कम 15 किमी है। मेरी तबियत जाने लायक नहीं है पर साथियों

का निर्णय शिरोधार्य। हमारे संघ के मात्र दसेक यात्री ही रात्रि विश्राम गुडयारी में करेंगें।

भोजन के बाद मैंने मामाजी से आगे जाने की इजाजत मांगी। मामाजी (गुरुजी) उस समय भोजन कर रहे थे। नाराज से होकर बोले, 'खाना तो खा लूं। फिर विदा करुंगा। ऐसे कैसे जाओगे?' मुझे यहां का दस्तूर ध्यान नहीं रहा। अफसोस हुआ। भोजन करके गुरुजी ने रोली अक्षत का टीका लगा कर विदा किया। हमने गुरुजी के चरण छू कर आशीर्वाद लिया। गंगा मैया और भोले बाबा के जयघोष के साथ, सायं चार बजे हम अपनी अपनी कांवड़ कांधे पर उठा; आगे की यात्रा पर रवाना हो गये।

कलकतियां

गांव के बाहर निकलते ही आई गुडयारी नदी में हम सभी ने सामूहिक फोटो खिंचवाये। हमारे दिल्ली के रवि मामा इस समय गुडयारी नदी में नहाने का आनंद ले रहे थे। वे कल सुबह ही प्रस्थान करेंगें। हम सातों बारां बम साथ आगे बढ़े पर जल्द ही प्रदीप तथा महावीर बम आगे निकल गये। मुझे रास्ते में चक्कर से आने लगे। सभी साथी मेरे लिये रुके। मैंने दही व केले खाये। थोड़ी जान आई तो कदम उठे और हम शीघ्र ही शिवपुरी कलकतिया धर्मशाला में हमारे आगे के दो साथियों से आ मिले। यहां पुनः मैंने रात रुकने का निवेदन किया पर बहुमत से श्याम भवन पहुंचकर ही विश्राम करना तय किया गया। हमारे पास अभी देवघर पहुंचने के लिये पर्याप्त समय है।

कलकतियां में भी विशाल अनेकों सुविधायुक्त सेवा शिविर है। यहां 24 घंटे मुफ्त चाय शर्बत की व्यवस्था है। यहां पक्का प्रशासनिक भवन तथा विशाल कावड़ घर है। पक्के आधुनिक शौचालय, पेशाबघर तथा स्नानघर बने हुये हैं। स्नान एवं पेयजल की चौबीसों घंटे व्यवस्था है। विशाल पांडाल में भी कंकरीट का

पक्का फर्श है। चाचाजी ओम्जी साबू ने बताया कि यह धर्मशाला नवरंगराय मूलचंद (स्टीलकिंग) बहल राजस्थानवालों ने बनवाई है। अभी यात्रा में दी जा रही सेवाओं का सारा खर्च यह घराना अकेले ही वहन करता है तथा उस परिवार का कोई न कोई एक सदस्य डेढ महिने तक यहां रहता है। सुदर्शन को पैर की तथा मेरे को पेट की बीमारी के कारण हम यहां रुकना चाहते थे। हमें यहां रुकने के लिये अच्छी जगह भी मिल गई पर साथियों ने फिर हमें आगे खींच लिया। सुदर्शन के पैर में छेद हो गया है जिसमें बार बार मिट्टी भर जाती है। उसने पैर की सफाई करके अच्छी तरह पट्टी बांध ली। हम साढ़े छः बजे यहां से तेजी से चल कर अंधेरे के बावजूद साढ़े आठ बजे सात किमी दूर दर्शनियां पहुंच गये। रास्ते में जय बाबा भूतनाथ सेवा संघ का भूतबंगला आया जहां से लगातार कावड़ियों को भोजन के लिये आमंत्रित किया जा रहा था पर हम वहां बिल्कुल नहीं रुके। इस रास्ते में कलकतिया तथा भूतबंगला सबसे पुराने सेवा शिविर हैं। इन स्थानों का नाम ही सेवा शिविर के नाम पर प्रचलित हो गया है। भूतबंगला में कावड़ियों के लिये और भी अच्छी व्यवस्थायें हैं। हमारे पास देवघर में रुकने की व्यवस्था है अन्यथा अधिकांश कावड़िये रात कलकतिया या भूतबंगला में गुजार कर सुबह सीधे मंदिर पहुंच कावड़ चढाते हैं। पूरे रास्ते यहां बहुत सारे सेवा शिविर हम यात्रियों की हर प्रकार से सेवा करने में लगे हुये हैं। कौन सबसे अच्छा है मैं तो तुलना करने में अपने आप को असमर्थ पाता हूं।

दर्शनियां

हम आज सायं चार बजे गुडयारी गांव से आगे बढ़े थे। दुम्मा नामक स्थान से देवघर जिला शुरु होता है। सीमा पर देवघर प्रशासन ने यात्रियों के स्वागत के बड़े बड़े बोर्ड लगवा रखे हैं। मेडिकल टीम की व्यवस्था है। पुलिस प्रशासन चौकस है। 'डाक बम' के रजिस्ट्रेशन हेतु एक कार्यालय भी बनाया गया है। वहां

लिखा है, 'कृपया सभी डाक बम यहां रजिस्ट्रेशन करवाकर जायें ताकि आपको बाबाधाम दर्शनों में असुविधा न हो।' दुम्मा से कलकतिया तक रास्ते में अनेकों छोटी छोटी जलधाराऐं पार करके आना पड़ता है।

दर्शनियां पहुंचने पर हमने हमारी कावड़ हमारे संघ की अन्य कावड़ों के साथ अरुण खन्ना बम के दिशानिर्देश पर एक पंडे जी के तख्ते के सामने रख दी तथा सुस्ताने लगे। थोड़ी देर बाद पंडितजी ने आकर कावड़ पूजा करवाई तथा दक्षिणा प्राप्त की। दर्शनिया नामक इस स्थान पर पंडों की हजारों तख्तनुमा दुकानें सजी हुई हैं। इस स्थान का महत्व क्यों है? शायद यहां से वैद्यनाथधाम मंदिर के कलश के दर्शन आने वाले यात्रियों को हो जाते हैं। हमने भी शिखर दर्शन करना चाहा पर रात्रि होने के कारण हमें शिखर दर्शन नहीं हो सके। हमने यहां की बिजली व्यवस्था को कोसा।

यहां से धर्मशाला श्याम भवन का रास्ता बहुत पेचीदगी भरा है। हम सब साथ में अनुभवी खन्ना बम के पीछे–पीछे चलने लगे। बहुत सारी गलियां मोड़ पार कर कई जगह पूछते हुये हम नौ बजे श्याम कीर्तन मंडल के भवन में पहुंचे। पूरी यात्रा में यह दो किमी का रास्ता पार करना हमें बहुत भारी लगा। भीड़ भरे संकरे बाजार में निकलते समय कावड़ की पवित्रता का ख्याल भी मन से भुलाना पड़ा। हमें पहली मंजिल पर चढ़ने में भी जोर लगा। निर्धारित स्थान पर अन्य कावड़ों के साथ कावड़ रख हम आराम करने लगे। आधे घंटे तक हम एक दूसरे से पीने के पानी के लिये कहते रहे। यहां श्याम भवन में पहली मंजिल पर कोई सुविधा नहीं है। नीचे तल मंजिल तक जाने की श्रद्धा नहीं बची है। आज हम कम से कम चालीस किमी का फासला तय करके आये हैं। हमारे पैर कीचड़ से सने हुये हैं। पर धोने

कौन जाये। मुझे जबरदस्त नींद आ रही है। अभी कावड़ आरती नहीं हुई है, सो जाऊंगा तो फिर नहाना पड़ेगा। हमने बातें कर करके एक दूसरे को जगाये रखा। कोई आध घंटे बाद सबसे पहले सुदर्शन साबू ने उठने की हिम्मत की। वह नीचे जाकर पानी पीकर आया तथा हम सबके लिये भी पीने का पानी भरकर लाया। पानी पीने के बाद हम सब हिले। नीचे जाकर हाथ पांव धोये। कैलाश व चित्तौड़ा बाहर दुकान से नमकीन व बिस्कुट खरीद कर लाये जो सबने मिल बांट कर खा लिये।

जलाभिषेक

हमारे संघ की श्याम भवन में आज की शयन आरती रात दस बजे की गई। आरती करते ही मैं सो गया। संघ के भोजन में आचार एवं पूरी बनाई गई है। मैंने पेट खराब होने के कारण खाना नहीं खाया। मुझे पूरी यात्रा में पहली बार इतनी गहरी नींद आई। तारीख 22 जुलाई 1995 शनिवार सुबह साढ़े तीन बजे साथियों के बहुत जगाने पर ही मैं उठा। स्नानादि से निबट मंदिर की ओर रवाना होने में हमें पांच बज गये। हमने अपने गंगाजल के डिब्बे कावड़ से खोलकर अंगोछे में बांध लिये थे। हम बनियान व नेकर वाली वेशभूषा में ही थे। एक किमी दूर मंदिर पैदल पहुंच हम सीधे हमारे पंडाजी (साबू परिवार के) श्री शालिगराम हरिशंकर देवा पंडा जो मारवाड़ियों के पंडा कहलाते हैं की पेडी पर इस मंदिर परिसर में ही स्थित आनंद भैरव मंदिर वैद्यनाथधाम देवघर (बिहार) पिन 814112 पर चले गये। हमारा पूरा संघ इन्हीं से कावड़ पूजा करवाता है। डिब्बे खोलकर औपचारिक मंत्रों से डिब्बों का पूजन करवाया गया। हम अपना एक एक डिब्बा ले मंदिर की ओर चले गये। भीड़ नहीं थी हम तुरंत ही मंदिर में प्रवेश पा गये। पहले सभी भक्त एक हॉल में इकठ्ठा होते हैं फिर वहां से गर्भगृह में भेजा जाता है। मंदिर में पुराने छोटे दरवाजे हैं। गर्भ गृह में एक ही दरवाजा है तथा

उसके बाहर की तिबारी में दो दरवाजे हैं। आधुनिक सुविधायें पंखे, ट्यूबलाइट्स, तथा बड़े बड़े हवा बाहर निकालने के पंखे मंदिर के अंदर लगाये गये हैं। हॉल में से गर्भगृह में यात्रियों को एक साथ भेजा जाता है और ठूंस ठूंस कर भरा जाता है। पंक्ति न होने से धक्का मुक्की होती है तथा मेरे जैसे कमजोर लोगों के गिरने व कुचले जाने का खतरा रहता है। यहां भी जीवट ही काम आता है। महिलाओं एवं बच्चों की पृथक पंक्ति बनाई जाती है तथा बारी बारी से दरवाजे खोले जाते हैं।

हमारे एक हाथ में गंगाजली होती है तथा दूसरे हाथ में कुछ मुद्रायें। भगदड़ में आधा जल तो आपस मे कावड़ियों पर ही चढ़ जाता है। यहां सुरक्षाबलवालों की कमचियां खाने का भी शायद महात्म्य है। गेट से गर्भगृह में घुसाने के लिये कमचियां मारी जाती हैं और अंदर जाते ही बाहर भगाने के लिये कमचियां मारना शुरु कर देते हैं। हम हमारे पूर्व अनुभवी साथियों की राय के अनुसार गर्भगृह में घुसते ही दीवार के चिपक कर खड़े हो गये। भीड़ आई और मंदिर के बीचोंबीच स्थित शिवलिंग पर जल चढ़ाने दौड़ पड़ी। हम इस रेलमपेल को देखते रहे। बम लोटा बाबा पर उंढेलता और वह गिरता आगे किसी बम के सिर पर। बम झुककर भोले को प्रणाम् करना चाहता और पीछे से धक्का लगता। बम सीधा गिरता कुंड में भोलेनाथ पर। 'भोलेनाथ यह किसकी दुर्गति हो रही है। नर की या नारायण की। या आप भी जता रहे हो, एको अहं द्वितिय नास्ति। हे भक्त! जो मैं हूं वो ही तू है। जो तू है वो ही मैं हूं। जल तेरे ऊपर चढ़े या मेरे ऊपर। कोई फर्क नहीं है।' सुरक्षाबलों की कमचियां पड़ती और मंदिर खाली होने लगता। अंत में हम दीवारों से चिपके बम निकले और आराम से जल चढ़ाया। इसके लिये वहां स्थित पंडों को मुठ्ठी में दबाकर लाई गई दक्षिणा भी अर्पित की गई।

चाचाजी व सुदर्शन जल चढ़ाने के बाद शिवलिंग को छूने के लिये बैठे ही थे कि ऊपर से जल चढ़ा रहे बमों ने उन्हें गिरा कर लोटपोट कर दिया। यहां प्रतिमा पानी में डूबी रहती है अतः आंखों से दिखाई नहीं देती है। भक्तगण प्रतिमा छूकर ईश्वर की उपस्थिति अनुभव करना चाहते हैं। मैंने भी जल कुंड में हाथ डाल शिवलिंग स्पर्श किया। हम बिना कमचियां खाये बाहर आ गये। अपनी तपस्या पूर्ण होने तथा ईश्वर के दर्शन कर सब प्रसन्न थे। बोल बम के नारे लगाते हुये कुछ देर खुशी से नृत्य भी किया। बाहर आकर चाचाजी ने बताया कि बमभोले ने उन्हें प्रसाद दिया। वे जब भगवान के लिपट रहे थे तो उनकी मुठ्ठी में चांदी का बना बिल्व पत्र आ गया। चाचाजी बहुत प्रसन्न हैं, उन्होंने उस प्रसाद को लच्छे में बांध कर गले में पहन लिया। मैं संशय में रहा, क्या हमें इस तरह भगवान के चढ़ाई कोई वस्तु लेने का अधिकार है?

हम वापस अपने पंडाजी के आसन पर आये। वहां से हमारे गंगाजल के डिब्बे उठाये तथा इसी परिसर में स्थित अनेकों देवी–देवताओं के मंदिरो पर जल चढ़ाया। इनमें गणेशजी, मां–संध्या, लक्ष्मीनारायण, नाड्या, सूर्यनारायण, भै. रवबाबा, ब्रह्माजी, बुधदेव, मां अन्नपूर्णा के कुल नौ प्रमुख मंदिर हैं। सभी मंदिर प्राचीनकाल के बने हैं तथा पुरानी शैली की मूर्तियां ही इनमें विराजित हैं। यहां के मंदिर शिखर चौकोर शंकुल आकृति के हैं। बाबा के मंदिर के बिल्कुल सामने ही मां पार्वती का मंदिर है। माता के मंदिर का शिखर बाबा के मंदिर से थोड़ा सा छोटा है। दोनों मंदिर के शिखरों को जोड़ते हुये लाल कपड़े की विशाल ध्वजायें बांधी गई हैं। यहां ध्वजा बांधने के लिये दोनों मंदिरों पर सीढियां लगी हुई हैं। अभी हमारे सामने भी एक सेवक शिवमंदिर के शिखर पर चढ़कर ध्वजा

बांधने का काम कर रहा है। ये ध्वजा विभिन्न कार्यों के सिद्ध होने पर भक्तों द्वारा अपने नाम से चढ़ाई जाती है। यह मंदिर बहुत विशाल तथा भव्य है। यहां आये भक्त इस की कला को तो देख ही नहीं पाते हैं। भारी भीड़, थकान, जल्दबाजी, रेलमपेल और मिट्टी पानी से बनी रिपटन से किसी तरह सही सलामत निजात पाने पर ही हमारा ध्यान रहता है।

वासुकीनाथ

सारे मंदिर देवी–देवताओं के दर्शन कर अपने दोनों गंगा. जली के डिब्बे खाली कर हमने एक स्थान पर एकत्रित हो अगरबत्तियां जला कर भगवान की आरती की। बाद में हमारे पुरोहितजी व सब बुजुर्गों को प्रणाम् कर आशीर्वाद लिया। 6 बजे हम साइकिल रिक्शों में बैठ अपने मुकाम श्याम भवन आ गये। मंदिर में हमारे सारे कपड़े गीले व मिट्टी से सने हो गये थे। आते ही हमने कपड़े बदले। मिनी बस स्टैण्ड से हमने सात रु. सवारी में 45 किमी दूर स्थित वासुकीनाथधाम जाने के लिये मिनीबस पकड़ी। नौ बजे हम वासुकीनाथ पहुंच गये। वहां से साइकिल रिक्शा कर मंदिर के पास बाजार में उतरे। यहां हमारे बिछुड़े साथी ठाकुरिया को ढूंढने में कुछ समय जाया हुआ। वासुकीनाथ में स्थित पवित्र तालाब शिवगंगा में स्नान करने के बाद ही यहां दर्शन करने जाते हैं। हमने एक पंडाजी के तख्ते पर अपना सामान रख तालाब में स्नान किया। तालाब गहरा है अतः प्रशासन ने बचाव का पूरा इंतजाम कर रखा है। रस्सी बांध ाकर स्नान करने वालों को तालाब में अंदर जाने से रोका गया है। हर बीस मीटर पर चेतावनी देते हुये बैनर बांधे गये हैं। एक तैराक दो ट्यूब तथा एक छोटी नाव लेकर तालाब में सन्नद्ध है। मैं रस्सी की सीमा का उल्लंघन कर तालाब में आगे तैरने लगा तो वहां खड़े पुलिस वाले ने मुझे डांटकर वापस बुला लिया।

वासुकीनाथ पहुंचने के बाद से ही रह रह कर बरसात आकर हमें भिगो रही है। हम यहां कपड़े लेकर भी नहीं आये। हमने नहाने के बाद गीले कपड़े ही पहने। नहाकर हम मंदिर की ओर चले। रास्ते में पूजा सामग्री तथा दूध बेचने वालों की दुकानें लगी है। हमारे में से सिर्फ ठाकुरिया बम ने ही एक लोटा 80 प्रतिशत पानी वाला दूध भगवान को चढ़ाने के लिये लिया। हमने वहां स्थित एक कुये के पानी से लोटे भरे और पंक्तिबद्ध हो बहुत धक्का मुक्की तथा अव्यवस्थाओं के बीच भगवान वासुकीनाथ को जल चढ़ाया। बाद में एक लोटा और भर कर मां पार्वती सहित अन्य देवी देवताओं को जल अर्पण किया। यहां भी मंदिर शिखरों पर लगे कलशों पर ध्वजायें बांध ी गई है। मां पार्वती एवं वासुकीनाथ मंदिर की ध्वजायें परस्पर जोड़ी गई है। बिल्कुल वैद्यनाथ मंदिर की तरह। दोनों मंदिरों का शिल्प प्राचीन है तथा पूजा की परम्परायें एक जैसी है।

सुदर्शन साबू तथा मेरे में यात्रा में लगातार बिना खाये पिये व बिना आराम किये चलने के अलावा गौमुख आसन करने के मामले में भी मतभेद रहता था। कई लोग भोजन के बाद तथा पदयात्रा की थकान आने के बाद गौमुख आसन में बैठना लाभदायक मानते हैं। सुदर्शन भी अक्सर गौमुख आसन में बैठा रहता है। मैं इस आसन का विरोधी रहा हूं। थकान के बाद मैं पादोत्थान आसन में बैठता हूं। गौमुख आसन से घुटनों पर जोर पड़ता है जो बढ़ती उम्र के साथ हानिकारक हो जाता है। चाचा ओम्जी से कंजूसी करने के मामले में मेरी नाराजगी रहती है। दो पांच रु. के पीछे हमारा बहुत सारा समय खराब हो जाता है। हर जगह उनके द्वारा किये भुगतान से लेने वाला असंतुष्ट रहा। कई कावड़िये रात में देवघर आकर सोने तथा दूसरे दिन कावड़ चढ़ाने को उचित नहीं मानते। स्वयं रवि मामा मानते हैं कि कावड़ बासी हो जाती है। हमारे गुरुजी प्रातः भूखे पेट

कावड़ चढ़ाना ज्यादा उचित मानते हैं। इस यात्रा में मारवाड़ी यात्री ही सफेद बनियान में पदयात्रा करते है। बाकी अधिकांश भक्त भगवा कपड़े पहन कर चलते हैं। कई धार्मिक मान्यतायें तीर्थों में स्वतः ही प्रचलित हो जाती है।

जब हमने सुल्तानगंज से जल भरा था तो वहां के पंडि. तजी ने हमारे से पूछा था कि क्या हम वासुकीनाथ भी जायेंगें। हमारे स्वीकृति देने पर पंडितजी ने दोनों स्थानों पर जल चढ़ाने का संकल्प संस्कृत के श्लोकों से करवाया था। उस समय ही मेरे मन में आया था कि टोक दूं। हम गंगाजल लेकर तो सिर्फ वैद्यनाथ ही जायेंगे। पुराने अनुभवी साथियों के होते हुये मैने बोलना उचित नहीं समझा। यहां बिना वासुकीनाथ जाये यह यात्रा अधूरी मानी जाती है। कई श्रद्धालु वैद्यनाथधाम जल चढ़ाने के बाद आधी कावड़ पैदल ही लाकर यहां चढ़ाते हैं। ऐसे कई कावड़िया हमें रास्ते में आते हुये दिखाई दिये थे। कई कावड़िया गंगाजल की चार चरियां भरकर लाते हैं, दो वैद्यनाथ में एवं दो वासुकीधाम में चढ़ते हैं। दोनों जगह भगवान शिव की ही पूजा होती है। कहा जाता है कि वैद्यनाथधाम की स्थापना के समय वासुकीनाथ साक्षी थे। अब वे हमारी यात्रा के साक्षी बनते हैं।

वासुकीनाथ दर्शन के बाद अब हम गंगा माता के भार से मुक्त हो गये हैं। हमारी पूरी यात्रा सम्पन्न हो गई है। सबसे पहले हमने एक अस्थाई साधारण से होटल में दही, पूरी, जलेबी, पोहा ग्रहण कर पेटपूजा की। साइकिल रिक्शा कर बस स्टैण्ड आये। बसें लगी थी पर हमें भुट्टे बिकते नजर आ गये। चाचाजी ने पूरी होशियारी से छांटछांट कर भुट्टे सिकवाये जिससे हमें आध ा घंटा से ज्यादा लग गया। मिनीडोर में बैठकर ही वापसी की यात्रा की। वापसी में भी मैं पूरे रास्ते गाड़ी में सोता हुआ आया। बस से उतर पैदल श्याम भवन गये। सबने साबुन मलमल कर स्नान किया। सुदर्शन ने बहुत सारे कपड़े भी धोये। मैंने नींद

निकाली।

वासुकीधाम जाने के लिये कभी कभी हमारी बस का भी उपयोग कर लिया जाता है। पर इस वर्ष बस वासुकीधाम नहीं भेजी गई। एक तो सवारियां बहुत ज्यादा हो जाती है किस को बैठायें, किसको छोड़ें। दूसरा इतने लोगों के इकठ्ठा होने में बहुत समय लगता है। वापसी में भी कोई छूट गया तो विषाद का कारण बन जाता है।

यात्रा की समाप्ति के बाद विदा लेने का क्रम शुरु हो गया। सभी बम अब एक दूसरे को प्रणाम कर रहे हैं तथा इस अवसर पर जाने अनजाने में हुई भूलों के लिये क्षमा मांग रहे हैं। बस चालक गणेशजी पंडित तथा रघुवीर जी ने भी अपने मन के मैल साफ कर लिये हैं। भगवान ने अंत में सबको सद्बुद्वि और शांति प्रदान कर दी है। मैंने पहले लिखा था कि शायद रघुवीर जी आगे संघ के साथ यात्रा पर न आवें लेकिन मेरी यह सोच अब मुझे ही गलत लग रही है। हमने भी हमारे सभी छोटे बड़े साथियों को प्रणाम किया।

ढाई बजे हम बाजार घूमने निकले। प्रदीप के जूते खो गये हैं। उसने नई चप्पल खरीदी। सबने नाई की दुकान पर बैठ आठ दिन पुरानी दाढ़ी बनवाई तथा चार चार रु. अतिरिक्त दे मालिश करवाया। फोटो लाने के लिये बिल महावीर चित्तौड़ा को दिये जो आधे फोटो तो ले आया। वापस श्याम मंडल आ संघ का बना खाना प्रथम पंगत में बैठ कर ही ग्रहण किया क्योंकि सभी को जोर की भूख लगी थी। खाने के तुरंत बाद मैं तो ठीक सी जगह पर गमछा बिछाकर सो गया। मुझे गहरी नींद आई।

देवदर्शन

भाई लोगों ने मंदिर दर्शनार्थ चलने के लिये मुझे जगाया। शाम छः बजे हम पेंट शर्ट, जूते–मौजे पहन मंदिर के लिये

निकले। हमने सात दिन बाद पतलून पहनी है। टहलते से बा. जार में मोलभाव करते पैदल ही मंदिर के पश्चिमी द्वार पर पहुंच गये। दरवाजे पर बैठी एक महिला को जूते संभलाकर मंदिर में प्रवेश कर गये। लाइन अभी भी लगी है पर ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। दर्शन का तरीका, भगदड़, भीड़ सुबह की ही तरह है। फर्क यह है कि अभी किसी के हाथ में पानी नहीं है जिससे हम भीगे नहीं। यहां गंगाजल चढ़ाने का समय सुबह पांच बजे से दोपहर चार बजे तक है। सायं पांच से रात 11 बजे तक श्रृंगार दर्शन होते हैं। अभी भगवान पर बेलपत्र फूलों आदि का ढेर लगा था और मैं अभी भी शिवलिंग के दर्शन नहीं कर पाया। बाहर आकर जूते चप्पल प्राप्त किये। रखवाली करने वाली औरत ज्यादा पैसे मांगती रही और हम अपने हिसाब से दे बाजार आ गये। यहां देवघर के पेड़े बहुत प्रसिद्ध हैं। आध ाा किलो पेडे लेने के लिये तीन चार दुकानों के पेडे चख लिये और बहुत बड़े खरीददार की तरह भाव ताव किया। अंत में एक दुकान से पेडे खरीद कर खाये जिनमें मावा खराब हो चुका था। मुझे अपने फोटो लाने थे। मैंने रसीद महावीर चित्तौड़ा को दे दी थी। उसे फोटोग्राफर की दुकान के पते में कुछ गलतफहमी हो गई और हम पूरा बाजार घूम लक्ष्मी चौक पहुंच गये। यहां रविशंकर जी मिल गये। उनका फोटोग्राफर यहीं था। बाद में हम तीनों ने स्टूडियो फोटोग्राफर ढूंढा। उसकी दुकान कोई एक किमी दूर मारवाड़ी सेवा संघ के भवन के पास निकली। फोटो लेकर वापस लौटे तो बाजार में हमारे संघ के कई बम खरीददारी करते मिले। सबने एक दुकान से भोले के गीतों वाली बहुत सारी कैसेट्स खरीदी। हमें धर्मशाला श्याम भवन पहुंचने में रात के साढ़े नौ बज गये।

हमारे पंडा जी अपने मुनीमजी के साथ श्याम भवन दक्षिण ाा प्राप्त करने के लिये आये हुये हैं। हम बारां बमों ने सब मिला

कर इक्कीस रु. दक्षिणा दी तथा अपने नाम पते उनकी बहियों में लिखवाये। महावीर चित्तौड़ा आते ही सो गया उसे हस्ताक्षर करने तथा और जानकारी बही में लिखाने के लिये जगाया तो वह नहीं उठा तथा नाराज सा होकर पुनः सो गया। पंडित जी ने बाबाधाम की भभूत की दो–दो पुड़िया सभी को दी। घर जाकर एक पुड़िया का चरणामृत बना कर पीना है तथा एक पुड़िया सभी परिजनों को तिलक के रूप में सिर गले में लगानी व मुंह में रखनी है। इसी दौरान बाबाधाम की महत्ता के बारे में बहस चल गई।

एक वैद्यनाथधाम दक्षिण भारत में भी है। असल में ज्योतिर्लिंग वह है या यह। पंडित जी ने देवघर को असली ज्योतिर्लिंग होने के प्रमाण में एक श्लोक सुनाया। उसका तात्पर्य यह है कि चिताभूमि शक्तिपीठ में ही ज्योतिर्लिंग है। चिताभूमि यह देवघर ही है। दक्ष यज्ञ ध्वंस की कथा के अनुसार सती का ह्रदय देवघर में गिरा था जिसका चिता बनाकर यहीं दाह संस्कार किया गया था। इस तरह देवघर चितास्थल है और असली ज्योतिर्लिंग है। इसका एक ओर प्रमाण मंदिर के कलश पर लगी चंद्रमणिका भी है। इसके लिये भी कोई श्लोक सुनाया गया। जिसका तात्पर्य है कि ज्योतिर्लिंग वैद्यनाथधाम मंदिर के शिखर पर चंद्रमणिका बनी हुई है। मैंने मंदिर शिखर को ध्यान से नहीं देखा है पर यहां बताया गया कि मंदिर निर्माण के समय से ही वैद्यनाथधाम के शिखर पर चंद्रमणि लगी हुई है जहां से गंगा अदृश्य जलध ाारा के रूप में शिवलिंग पर निरंतर गिरती रहती है।

बैजू चरवाहा

देवघर में वैद्यनाथधाम स्थापना की भी कथा है। रावण ने भारी तपस्या कर शिवजी को प्रसन्न किया तथा अपने साथ लंका में चलने का आग्रह किया। शिवजी ने अपनी प्रतिमा देकर

उसे ले जाकर लंका में स्थापित करने के लिये कहा। साथ ही शर्त जोड़ दी कि प्रतिमा जहां कहीं भी रखोगे वहीं स्थापित हो जायेगी। रावण वीर था तथा उसे अपनी वीरता पर बहुत घमंड भी था। उल्लास में भर प्रतिमा को साथ लिये वह लौटने लगा। रावण भगवान को लेकर चला तो सारे देवता चिंतित हो गये। देवताओं ने ब्रह्माजी से प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने सरस्वतीजी से कहा और सरस्वतीजी ने गंगा को रावण के पेट में भेज दिया। रावण को यहां देवघर में आकर पेशाब करने की इच्छा हुई। उसने प्रतिमा अपने साथ चल रहे सेवक (कुछ के अनुसार बैजू नाम के चरवाहे) को नीचे न रखने की हिदायत देकर सौंप दी और स्वयं पेशाब करने चला गया। देवयोग से उसको बहुत देर तक पेशाब होता रहा और यहां देवघर में एक तालाब बन गया। सेवक इतनी देर बहुत भारी हो रहे भगवान शिव को नहीं संभाल सका और उसने शिवजी को नीचे रख दिया। यह भी कहा जाता है कि रावण के साथ विप्र वेशधारी सेवक के रूप में स्वयं विष्णु भगवान चल रहे थे और उन्होंने भगवान शिव को लंका जाने से रोकने के लिये यह लीला की। रावण जब नहा कर लौटा तो उसने शिव प्रतिमा को उठाना चाहा। लाख प्रयास के बाद भी वह नाकाम रहा। आकाशवाणी हुई कि अब शर्त के अनुसार यह शिवलिंग यहीं स्थापित होगा। रावण ने गुस्से में आकर शिवजी को अपने पैर के अंगूठे से जमीन में दबा दिया और कहा कि लंका नहीं जाओगे तो मैं आपको पाताल भेज दूंगा। भोले शंकर ने अपने भक्त का मान रखा और थोड़े से जमीन में घुस गये। आज भी यहां शिवलिंग जमीन से थोड़ा सा ही बाहर निकला हुआ है। रावण की लघुशंका से निर्मित इस तालाब में कोई नहीं नहाता है। यहां एक दूसरा तालाब भी है जिसे शिवगंगा कहते हैं। बिहार के कावड़िये उस तालाब में कावड़ को धोकर तथा स्वयं स्नान करके ही भगवान को कावड़ चढाते है। हमारे

चिड़ावा कावड़िया संघ में इस तालाब में नहाने की परम्परा नहीं है।

रात हम ग्यारह बजे सो पाये और बहुत गहरी नींद आई।

विदाई

तारीख 23.7.1995 रविवार प्रातः छः बजे नहा धो आगे की यात्रा के लिये तैयार हो गये। अभी हमने वापसी यात्रा चिड़ावा कावड़िया संघ की बस में ही करना तय किया है। साढ़े आठ बजे संघ का नाश्ता हुआ। रास्ते के लिये भोजन बना कर बस में रख लिया गया है। आज संघ का लक्ष्य वाराणसी पहुंच विश्राम करना है। दस बजे झाझा तथा सवा ग्यारह बजे जमुई पहुंचे। नवादा से कुछ पहले करीब सवा तीन बजे हमें बस में ही खाना बांटा गया। आगे चापाकल देखकर बस रोकी गई। सबने अपनी पानी की जरूरतें पूरी की। नवादा से हम गया आये। गया जी में हमें शहर की गलियों से निकलना पड़ा। गया से तीस किमी दूर डोभी हम सायं सवा छः बजे पहुंचे। उसके आगे हमने जी. टी. रोड पकड़ा। यहां से वाराणसी अभी दो सौ बीस किमी है और हमें शाम के सात बज चुके हैं। सवा सात बजे शेरघाटी नामक स्थान पर बस कुछ देर जरूरी कामों के लिये रुकी। इसके बाद सबको नींद सी लग गई। सासाराम में हमने कुछ शोर अवश्य सुना था। बाद में आंख खुली तो हमारी बस वाराणसी के मारवाड़ी सेवा संघ भदैनी के सामने खड़ी थी। रात के एक से ज्यादा बज चुके हैं।

हम अपने बैग एवं छोटे सूटकेस उठाकर उतर पड़े। चौकीदार ने धर्मशाला का छोटा दरवाजा खोल दिया था। बस चालक पंडितजी ने धर्मशाला मैनेजर से अधिकार पूर्वक जगह मांगी। शायद इसी से नाराज हो उसने कह दिया 'कोई कमरा खाली नहीं है। एक बस पहले से ही खड़ी है। राधेश्यामजी

होते तो क्या तुम्हें नया कमरा बना कर दे देते। आगे शिवशक्ति धर्मशाला चले जाओ।' मैनेजर ने हमारे को बाहर निकाल दिया। गुरुजी तथा सुदर्शन साबू एक साइकिल रिक्शे में बैठ आगे ध र्मशाला ढूंढने गये पर वहां भी जगह नहीं थी। वापस आ दोनों ने मारवाड़ी सेवा संघ के मैनेजर से ही नम्रतापूर्वक बात कर कोई व्यवस्था करने का अनुरोध किया। नम्रता से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। मैनेजर ने हमारे लिये लाइब्रेरी हॉल खुलवा दिया। हम किसी तरह उसी में सो गये। इस प्रक्रिया में ढाई बज गये। थकान के कारण रात नींद अच्छी आई।

काशी

तारीख 24.7.1995 सोमवार पवित्र सावन माह का सोमवार। कितनी खुशकिस्मती है कि आज हम वाराणसी में भगवान शिव काशी विश्वनाथ को जल चढ़ाने जा रहे हैं। हम पांच बजे उठे तथा हाथमुंह धो साइकिल रिक्शों से दश्वामेष घाट पर पहुंचे। बालमुकन्द ठाकुरिया को गंगा मैया ने यहां आने के बाद उसका भूला काम याद दिला दिया। वह बारां से बच्चे के जडुले गंगा मैया में सलाने के लिये लाया था। इतने दिनों की यात्रा में अब आखरी अवसर पर उसे इसकी याद आई। वह रिक्शे में बैठ वापस धर्मशाला जढुल्यों की पोटली लेने के लिये चला गया। हमारा आज गंगा के इस पार ही स्नान करने का विचार था पर नत्थू नाविक के आग्रह पर गुरुजी उसकी नौका में जा बैठे और पीछे पीछे पूरा संघ नौका में बैठ गया। हमने गंगा पार जा स्नान किया और वापस इस पार आ गंगाजल से भरे लौटे ले काशी विश्वनाथ के दर्शन को चल पड़े। आज मंदिर में बहुत भीड़ है। बहुत दूर से ही हम भीड़ का हिस्सा बन गये तथा भीड़ के धक्के से ही आगे बढते रहे। मंदिर के अंदर रस्सी बांधी गई

है पर प्रशासन यहां कोई व्यवस्था करवाने में सफल नहीं हो पा रहा। हमारे हाथ में गंगाजल का लौटा है जो हमने हमारे सिर की ऊंचाई तक थाम रखा है। धक्के से गंगाजल आसपास के भक्तों पर या स्वयं हमारे ऊपर ही चढ़ रहा है। हम लगातार 'बोल बम' का नारा बुलंद किये हुये हैं। मंदिर के अंदर भोलेनाथ की प्रतिमा शिवलिंग दुग्ध मिश्रित जल में आंशिक डूबी हुई है। मैंने भी दर्शन कर 'हर हर महादेव' कहते हुये शिवलिंग पर जल अर्पित किया। सुरक्षाबल वालों के धक्कों ने हमें तुरंत ही मंदिर के बाहर भेज दिया। हमें पीछे के रास्ते से निकाला गया था जहां से बहुत सी गलियां पार कर हम मां अन्नपूर्णा मंदिर तक पहुंच सके। वहां से बाजार आने में भी हमें कई संकरी गलियों से पूछताछ करते हुये आना पड़ा। वास्तव में आज मुख्य मार्ग को एक तरफा कर रखा है ओर हमें यहां के रास्तों की जानकारी नहीं है।

चाचा ओम्प्रकाशजी साबू के मार्गदर्शन में हम पैदल ही मारवाड़ी सेवा संघ पहुंच गये। रास्ते में आम खाये तथा चाय का सेवन हुआ। धर्मशाला में संघ का नाश्ता–पोया व सेव तैयार मिला। लगभग सबने धर्मशाला में दुबारा स्नान किया तथा कपड़े भी धोये। आज हमारा साथी बालमुकन्द ठाकुरिया हमारे से विदा हो रहा है। वह अभी बस से कानपुर जा रहा है। वहां उसकी बहिन से मिल अवध एक्सप्रेस से कोटा पहुंच जायेगा। हमने मामाजी उर्फ गुरुजी से हमारे जमा पैसे वापस लिये तथा आपसी हिसाब किया। अभी तक हमारा मात्र 580 रु. प्रति व्यक्ति खर्च आया है। संघ में शायद 1000 रु. प्रति व्यक्ति खर्च और आयेगा। हमने हमारी संघ के साथ यात्रा को विंध्याचलदेवी मां के दर्शन तक के लिये बढ़ा लिया है। विंध्यवासिनी देवी मां का

मंदिर जिला मिर्जापुर (उ.प्र.) में है तथा यहां वाराणसी से मात्र दो घंटे का रास्ता है। दोपहर का खाना बना कर बस में रख लिया गया। हम दोपहर डेढ़ बजे वाराणसी छोड़ सके।

देवी विंध्यवासिनी

ढाई बजे गंगा पुल पार कर मिर्जापुर रोड पर चले। रास्ते में बस में डीजल भी भरवाया गया। विंध्यवासिनी से 32 किमी पहले हमने रुक कर भोजन किया। आज तुरई की सब्जी के साथ परांठे, एक–एक बंगाली मिठाई तथा एक–एक आम भोजन में दिया गया। वाराणसी से 63 किमी दूर चलने के बाद उत्तर प्रदेश के एक आर. टी. ओ. ने हमारी गाड़ी रोकी। चालक गणेश पंडितजी के जोर–जोर से बोलने से नाराज हो वे चालान बनाने को उद्यत हो गये। बाद ने सुदर्शन सहित बस के अन्य यात्रियों ने नम्रतापूर्वक बात की तो उसने बस को जाने दिया। बस का चालान बनाने का आर. टी. ओ. के पास उचित कारण भी था। हमारी बस का मिर्जापुर जिले में प्रवेश करने का परमिट 27.7. 95 का है और हम आज 24. 7 को ही मिर्जापुर जिले में घुस रहे हैं। आर. टी. ओ. को बस का फर्स्ट एड बॉक्स भी दिखाना पड़ा।

मिर्जापुर से बारह किमी आगे इलाहाबाद रोड से एक रोड दायीं ओर जाता है। जिस पर चल कर हम गंगा नदी के बिल्कुल किनारे बसे गांव विंध्याचल पहुंच गये। बस से उतरने के बाद संकरे मार्ग पर कोई एक किमी पैदल जाना पड़ा। गली के दोनों ओर पूजा सामग्री, सौन्दर्य प्रसाधन, हस्तकला आदि की दुकानें सजी थी। यह मंदिर भी शक्तिपीठ है। मंदिर का नवीनीकरण किया गया है और इसमें अधिकांश कोटा स्टोन का काम है। मुख्य मंदिर के आसपास कई अन्य देवी देवताओं के छोटे मंदिर भी हैं। मंदिर के आसपास बहुत गंदगी है। मंदिर में दर्शकों को

पंक्तिबद्ध करने के लिये बहुत लंबी लोहे के पाइप की रेलिंग लगाई गई है। मंदिर में प्रवेश एवं निकास के दो दो दरवाजे हैं। देवी की प्रतिमा के चारों ओर लोहे की जाली लगाकर पिंजरा जैसा बनाया गया है जिसमें तीन बलिष्ठ पुजारी खड़े हैं। भक्त जाली के बाहर से दर्शन कर पूजन सामग्री पुजारीजी को दक्षिण ा सहित देते हैं। पुजारी जी नारियल चटका कर प्रसाद भक्त को दे देते हैं। यदि पूजा सामग्री के साथ दक्षिणा नहीं दी गई तो उसकी मांग कर ली जाती है। विशेष भक्तों को जाली से अंदर लेकर माताजी की प्रतिमा के चरण स्पर्श करने की अनुमति दी जाती है। चाचाजी ओम्प्रकाशजी की यहां पुजारी से शायद पूजा के साथ दक्षिणा न रखने के मामले में मुठभेड़ हो गई। मामला गाली गलौच तक पहुंच गया। हाथापाई होने के पहले हमारे जैसे लोगों ने बीच बचाव कर मामला निबटाया। चाचाजी ने बाद में बताया, 'भगवान के दरबार में लूट मचा रखी है। मेरे से कहता है कि दक्षिणा नहीं रखोगे तो तुम्हें पूजा नहीं करने देंगे। माताजी जैसे इनके बाप की हो।'

मंदिर में गर्भगृह के बाहर अगरबत्ती, धूप, दीप लगाने का स्थान है। मंदिर के पिछवाड़े में विशाल यज्ञशाला है जहां चार गुणा चार फुट लगभग का यज्ञ कुंड है। यहां कई परिवार यज्ञ अनुष्ठान करवा रहे हैं। आसपास की परिस्थिति देख मुझे लगा शायद यहां जीव बली की परम्परा जीवित है।

शाम छः बीस पर हम बस में बैठ इलाहाबाद की ओर रवाना हो गये। हम बारां के छः साथियों ने विचार विमर्श कर इलाहाबाद ही बस से उतरने का निश्चय किया। बस को आगे चित्रकूट की यात्रा पर जाना है। इलाहाबाद के गंगा के बड़े पुल के पहले हमने सभी बुजुर्गों को प्रणाम् कर विदा ली। बस चालक पंडितजी ने एक विक्रम रिक्शा कर हमें उसमें बिठाया। हम छः सवारी हमारे छः सूटकेस तथा पांच बैग किसी तरह

विक्रम रिक्शा में ठूंसे। हमारे संघ से विदा होने तक हमें साढ़े आठ बज चुके थे। विक्रम वाहन कबाड़ा सा था। दो बार उसके पहियों के बोल्ट ढीले हुये और दो बार चढ़ाई पर हमारे को धक्का लगाना पड़ा। रेल्वे स्टेशन पर किराया देने के मामले में भी उससे तकरार हुई। अब हमें हमारी वापसी यात्रा की रेलगाड़ी देखनी है।

यात्रा वापसी

यहां इलाहाबाद एक्सप्रेस जाने के लिये तैयार खड़ी है पर उसका टूंडला स्टोपेज नहीं है। गोहाटी से दिल्ली जाने वाली तिनसुखिया सुपरफास्ट चार घंटे देरी से चलने के कारण यहां रात बारह बजे आयेगी और हम उसमें बैठ सकते हैं। हावड़ा से नई दिल्ली जाने वाली पूर्वा एक्सप्रेस भी दो घंटा विलम्ब से चलने के कारण रात एक बजे हमें मिल सकती है। पटना से नई दिल्ली चलने वाली मगध एक्सप्रेस आध घंटा देरी से चल रही है उसका इलाहाबाद आने का सही समय रात बारह बजकर पैंतालीस मिनट है। हमने टिकट खिड़की से अगले दिन की अर्थात् 25.7.1995 की तारीख लगवाकर सुपरफास्ट गाड़ी के टिकट ले लिये। अब जिस भी गाड़ी में सुविधा होगी बैठ जायेंगे। इलाहाबाद से टूंडला चार सौ किमी है जो सुपरफास्ट गाड़ियों में चार घंटे का रास्ता है।

रात साढ़े बारह बजे घोषणा हुई कि दिल्ली जाने वाला ब्रह्मपुत्रमेल प्लेटफार्म नम्बर दो पर आ रहा है। हम सारे सामान समेट प्लेटफार्म नम्बर दो पर चले गये। आगे ही आगे जा एक साधारण डिब्बे में चढ़ गये। मालूम पड़ा कि यह तो मिलेट्रीवालों का डिब्बा है। बहुत माथापच्ची के बाद नम्रतापूर्ण बात करने पर मिलेट्रीवाले हमें गैलेरी में टायलेट्स के पास बैठने देने के लिये राजी हुये। रात के एक बजे हमारी गाड़ी रवाना हुई जो कानपुर

होते हुये साढ़े छः बजे टूंडला पहुंची। हाथमुंह धोकर हम पौने आठ बजे स्टेशन के बाहर आये। हमें तुरंत आगरा पहुंच कोटा जाने वाली गाड़ी पकड़नी है। टूंडला से आगरा जाने वाली पैसेंजर खड़ी है पर हमने जल्दी पहुंचने के चक्कर में डेढ सौ रु. में एक जीप कर ली। जीप से 32 किमी दूर आगरा हम पौने नौ बजे पहुंचे। आगरा पहुंचने पर पता लगा कि कोटा जाने वाली गाड़ी के छूटने का सही समय 8.15 का है पर अभी तक तो गाड़ी कोटा से आई ही नहीं है। जो गाड़ी आयेगी वही जायेगी। अब हमें हमारी टूंडला से आगरा पहुंचने की भागदौड़ करने पर अफसोस हुआ। यदि हम जानकारी कर लेते तो आराम से ही आते या टूंडला प्लेटफार्म पर समय जाया नहीं करते। यहां आने के बाद सबको बारां पहुंचने की जल्दी लग गई है। हमारी आपस में बहुत झिक–झिक हुई। सुदर्शन हमें एक्सप्रेस बस से जयपुर ले जाकर वहां से गणगौर एक्सप्रेस द्वारा कोटा पहुंचाना चाहता है। दूसरा विकल्प यहां से बस से गुना जाकर वहां से दो बजे बारां की गाड़ी पकड़ने का है। एक विकल्प किसी भी साधन से मथुरा या दिल्ली बंबई लाइन के किसी स्टेशन पहुंच कोई भी कोटा जाने वाली गाड़ी पकड़ने का है। सारे ही तरीकों से यात्रा करने पर भागदौड़ बहुत हो जाती तथा पैसा भी बहुत खर्च होता। हमने सारे विकल्पों को खारिज कर आगरा फोर्ट से ही सस्ती और आरामदायक यात्रा करना तय किया।

हमने आगरा फोर्ट रेल्वे स्टेशन के बाहर सरसों के तेल में बनी मसालेदार पुड़ियों का नाश्ता किया। टिकट लेकर प्लेटफार्म पर गये और वहां के स्नानागारों का उपयोग कर नहा धों कर निपटे। गाड़ी लगने पर छः सीटों पर पसर गये। गाड़ी 11 बजे चली। हमें उम्मीद बंधी कि कोटा से बारां के लिये अंतिम गाड़ी शटल जो साढ़े नौ बजे छूटती है हमें मिल जायेगी। सवाई माध ोपुर तक रात ढाई बजे तक सब ठीक रहा इसके बाद ग्रामीण

बार–बार जंजीर खींच गाड़ी को रोकने लगे। हमारी खीज गाड़ी रुकने के साथ ही बढ़ जाती। एक जगह यात्रियों और गार्ड में इस मामले में बहुत झगड़ा हुआ। बाद में जंजीर से गाड़ी रुकने का सिस्टम ही गार्ड ने हटवा दिया। हम सवा नौ बजे कोटा उतरे। उतरते ही 4 नम्बर प्लेटफार्म से भागकर तीन नम्बर प्लेटफार्म पर पहुंचे। यहां अभी तक बारां जाने वाली गाड़ी लगी ही नहीं थी।

हम दुश्चिंताओं से मुक्त हो प्लेटफार्म नम्बर एक पर दो पारियों में आकर चंद्रभानजी के रेस्टोरेंट की प्रसिद्ध पुड़ी सब्जी खाकर पेट पूजा कर गये। यहां पूरी सब्जी के लिये इस समय भी लाइन लगी हुई थी। सुदर्शन ने बारां बात कर ली है। उसकी जीप हमें बारां गाड़ी पर लेने आ जायेगी। गाड़ी साढ़े दस बजे लगी। सारी गाड़ी खाली पड़ी थी। 11 बजे कोटा से चल कर शटल एक बजे बारां पहुंची तब तक हम सभी गहरी नींद में सो रहे थे। सुदर्शन की जीप के अतिरिक्त यहां पुरुषोत्तमजी की जीप भी उन्हें लेने आई थी। पुरुषोत्तम जी इस गाड़ी में भंवरा से बैठे थे। मैं और चित्तौड़ा उनकी जीप में बैठ घर पहुंचे।

इस तरह 12.7.1995 प्रातः से शुरु हुई हमारी यात्रा अंग्रेजी नियम के अनुसार 26.7.1995 को सुबह एक बजे हंसी खुशी समाप्त हुई।

,,,,,

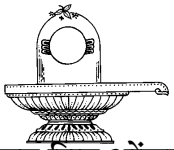

आरती

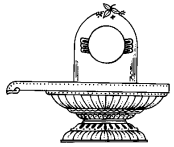

ॐ जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धङ्गीधारा ॐ हर-३ महादेव॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे-
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजै॥ ॐ हर-३ महादेव॥

दो भुज चार चतुर्भुज, दस भुज ते सोहे।
तीनों रुप निखरता, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ हर-३ महादेव॥

अक्षमाला वनमाला मुण्ड मालाधारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भोले शुभकारी॥ ॐ हर-३ महादेव॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक देवादिक संगे॥ ॐ हर-३ महादेव॥

कर मध्ये कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्ता जगभर्ता जग पालनकर्ता॥ ॐ हर-३ महादेव॥

ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका॥ ॐ हर-३ महादेव॥

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दो ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत महिमा अतिभारी॥ ॐ हर-३ महादेव॥

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥ ॐ हर-३ महादेव॥

आरती

शीश गंङ्ग अर्द्धंङ्ग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत है, गुण भक्तन शिव के दासी॥

शीतल मन्द सुगन्ध पावन बहै, बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त सुर, राग रागिनी अतिगासी॥

यक्ष रक्ष भैरव जहां डोलत बोलत है वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत है गुंजासी॥

कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु-लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहां डोलत, करत दुग्ध की वर्षासी॥

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिम राशि।
छहों तो ऋतु नित फलत रहत है, पुष्प चढ़त है वर्षासी॥

देव मुनिजन की भीड़ रहत है, निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा विष्णु हर का ध्यान धरत है, कुछ शिव हमको फरमासी॥

ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंङ्कर, सदा आनन्दित सुख राशि।
जिनकी सुमिरण सेवा करता, टूट जाय यम की फांसी॥

त्रिशूलधरजी को ध्यान निरन्तर, मन लगायकर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म-जन्म शिव पद पासी॥

कैलाशी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान कृपा कीजो॥

आप तो प्रभू जी सदा सयाने, अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो॥

अभयदान दीजो प्रभू मोरे, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलनाथ बाबा भक्त निरंजन, भय-भंजन भव शुभकारी॥

काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भजामि शंकर, हर-हर शंकर तुम शरणम्॥

बायें से : संजय मंत्री, नोरतमल, मुरारीलाल डांगा,
परमेश्वर दयाल मालानी गुरूजी, सुदर्शन साबू, रवि शंकर मालानी

हेमराज
ओमप्रकाश साबू
सुदर्शन साबू

पंडित गणेश शर्मा,
कैलाश गोयल,
सुदर्शन साबू

प्रदीप, हेमराज, सुदर्शन, नोरतमल, संजय

सुदर्शन साबू, अरूण खन्ना, संजय मंत्री, नोरतमल, रविशंकर झालानी

बायें से दायें नोरतमल, हेमराज, सुदर्शन साबू, संजय मंत्री